प्रस्तावना

परमात्मा नव-युग अर्थात् नई दुनिया का निर्माता है। नई दुनिया के निर्माण के लिए परमात्मा को पुरानी दुनिया के अन्त और नई दुनिया के आदि के संगम पर आना होता है। संगमयुग पर परमात्मा आकर आत्माओं को आत्मा, परमात्मा और सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देकर आत्माओं के गुण-धर्म-संस्कारों को बदलते हैं। परमात्मा के साथ और आत्मा, परमात्मा और सृष्टि-चक्र का ज्ञान पाकर आत्माओं को परमानन्द का अनुभव होता है, जो त्रिलोक और त्रिकाल में कब और कहाँ भी नहीं हो सकता है। जिन सत्यों का ज्ञान परमात्मा देते हैं, उसकी समझ आत्मा में जितनी अच्छी होगी और उसकी धारणा होगी, वह उतना ही नई दुनिया के लिए पुरुषार्थ कर सकेगा और इस संगमयुग की परम-प्राप्तियों की अनुभूति कर परम-सुख का अनुभव कर सकेगा।

विचार करो बाबा ने हमको क्या नहीं दिया है! जिन सत्यों को जानने के लिए और जिस स्थिति को पाने के लिए सारी दुनिया के धार्मिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक, विचारक सब उत्सुक हैं, प्रयत्नशील हैं, अरबों-खरबों रुपया खर्च कर रहे हैं, उन सब रहस्यों का बाबा ने हमको स्पष्ट, सत्य, तर्क-संगम, विवेकयुक्त ज्ञान दिया है और इस मानव जीवन की सफलता का अर्थात् मुक्त-जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव कराया है और उस स्थिति की अनुभूति में सदा काल रहने के लिए मार्ग दिखाया है और दिखा रहे हैं, हमको सहयोग कर रहे हैं, हमारा सदा साथ दे रहे हैं।

सारा विश्व इस सृष्टि रचना के राज़ को जानने के लिए, मुक्ति-जीवनमुक्ति को पाने के लिए, विश्व के राज्य अधिकारी बनने के लिए, अमृत्व को पाने के लिए, निर्भय-निश्चिन्त-निर्संकल्प होकर सुख-शान्तिमय जीवन जीने के लिए सतत प्रयत्नशील हैं, ज्ञान सागर बाबा ने हमको उस सबका ज्ञान दिया है, अनुभव कराया है। जो इस जीवन के महत्व को जानकर यथार्थ पुरुषार्थ करता है, वह सदा ही जीवन में सफलता का अनुभव करता है।

नव-युग और नव-युग निर्माता

विषय सूची

विषय			पेज नं.
संगमयुग और संगमयुग की प्राप्तियाँ	.....	.....	9

ज्ञान पक्ष में

अनुभूति पक्ष में

संगमयुग की प्राप्तियाँ और सतयुगी प्राप्तियाँ - दोनों में अन्तर

संगमयुग की प्राप्तियों और सतयुग की प्राप्तियों का तुलनात्मक अध्ययन

Q.बापदादा क्या चाहते हैं?

मन्सा सेवा	.....	.....	22

मन्सा सेवा और उसका विधि-विधान

मन्सा सेवा का स्वरूप

स्व-सेवा और विश्व-सेवा

व्यर्थ संकल्प से मुक्त हो, सदा समर्थ संकल्प की धारणा

व्यर्थ से मुक्त सदा समर्थ टेन्शन-फ्री स्थिति और उसके लिए पुरुषार्थ एवं धारणा

व्यर्थ संकल्पों से मुक्त और टेन्शन-फ्री जीवन का मूल मन्त्र	.....	.....	32

Q.व्यर्थ संकल्प खत्म हो जाये, उसके लिए क्या पुरुषार्थ करना है?

Q.क्या हमारे व्यर्थ संकल्प के लिए कोई अन्य आत्मा उत्तरदायी है अर्थात् कारण है और हमारे व्यर्थ संकल्प से हमारा क्या-क्या घाटा होता है?

Q.ईश्वरीय मन्सा शक्ति, पवित्र मन्सा शक्ति और शक्तिशाली मन्सा में कोई अन्तर है या तीनों एक ही हैं?

माला और माला में आने का राज़	.....	.....	40

Q.संस्कार मिलन और संस्कार परिवर्तन का क्या विधि-विधान है?

सेकण्ड में बिन्दुरूप अर्थात् स्व-स्थिति में स्थित होने के अभ्यास का महत्व

Q.ब्रह्मा बाप ने जीवनमुक्त स्थिति बनाने के लिए मुख्य पुरुषार्थ क्या किया, जिसके आधार से उन्होंने सदा जीवनमुक्त स्थिति का सुख अनुभव किया और हम भी उस पुरुषार्थ को फॉलो करें तो हम भी जीवनमुक्त स्थिति का सुख अनुभव कर सकते हैं, जो बाबा हमारे से चाहता है?

Q.बिन्दुरूप में स्थित होने के अभ्यास में मन-बुद्धि को कहाँ और किस रूप में स्थित करें अर्थात् भृकुटी में या परमधाम में?

	.....	.....	45

बिन्दुरूप अर्थात् स्व-स्थिति और उसके अभ्यास में सहज सफलता का पुरुषार्थ
Q.सेकण्ड में फुल स्टॉप लगाने का भाव-अर्थ क्या है? 50
Q.स्थिति और स्मृति में क्या अन्तर है?
गीता का भगवान कौन और परमात्मा सर्वव्यापी नहीं
Q.परमपिता परमात्मा शिव ही भगवान है, वही गीता ज्ञान का दाता है, यह कैसे सिद्ध हो सकता है?
मधुबन भूमि और मधुबन निवासी 52
Q.मधुबन की क्या-क्या विशेषतायें हैं, जो मधुबन निवासियों की बुद्धि में जागृत रहें तो सदा वह नशा और खुशी रहे और सदा उड़ती कला रहे?
मुरली और मुरलीधर 55
Q.क्या साकार बाप के समय और अव्यक्त बापदादा के समय के यज्ञ का विधि-विधानों में कोई अन्तर है?
Q.जब सृष्टि की और सब योनियों की आत्मायें बिना पुरुषार्थ के पावन बन जाती हैं तो मनुष्यों और उसमें भी विशेष ब्राह्मण आत्माओं को बाबा का ये ज्ञान धारण करने और राजयोग के अभ्यास की आवश्यकता क्यों है?
Q.ज्ञान का सुख और योग द्वारा जीवनमुक्त स्थिति का परम सुख किस आधार पर और किन आत्माओं को प्राप्त होता है? 58-59
Q.लौकिक दुनिया में कन्या की शादी हो जाती है तो उसकी बुद्धि एक पति के साथ ऐसी जुट जाती है, जो दुनिया का सब कुछ भूल जाती है। अभी हमने भी परमात्मा के साथ सम्बन्ध जोड़ा है, तो हमारी बुद्धि परमात्मा के साथ ऐसी क्यों नहीं जुटती है, जो उसके सिवाए कोई भी याद न आये?

नव-युग और नव-युग निर्माता

ज्ञान सागर, पतित-पावन, निराकार, परमपिता परमात्मा नव-युग का निर्माता है। वही आकर सतयुगी नई दुनिया का नव-निर्माण करता और कराता है, परन्तु उनको नई दुनिया के निर्माण के लिए पुरानी दुनिया अर्थात् कलियुग में ही आना होगा। इसलिए वे कलियुग के अन्त और सतयुग की आदि के संगम पर आकर नई दुनिया, नये युग का निर्माण करते हैं, इसलिए इस संगमयुग की विशेष महिमा है। इसी संगमयुग को पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है। यही एक युग है, जब आत्मा की और सारे विश्व की अर्थात् जड़-जंगम-चेतन प्रकृति की चढ़ती कला होती है। संगमयुग पर ही आत्मा और परमात्मा का मंगल मिलन होता है, आत्मा को परमात्मा से विशेष प्राप्तियाँ होती है, जिससे आत्माओं को परमसुख अर्थात् परमानन्द की अनुभूति होती है, उस अनुभूति को करने के लिए आत्मा को संगमयुग के गुण-धर्मों और प्राप्तियों का ज्ञान होना अति आवश्यक है, जिनका ज्ञान समय-समय पर बाबा ने दिया है।

Q. नवयुग संगम को कहें या सतयुग को कहें? यदि संगम को कहें तो कब से और कहाँ से कहें? यदि सतयुग को कहें तो कब से अर्थात् नये कल्प के आरम्भ से या लक्ष्मी-नारायण के सिंहासनारूढ़ होने से कहें?

Q. न्यू-मैन ब्रह्मा बाबा को कहें या श्रीकृष्ण को कहें? यदि ब्रह्मा बाबा को कहें तो कैसे और क्यों; यदि श्रीकृष्ण को कहें तो क्यों और कैसे?

Q. वास्तव में संगम का समय दोनों कल्प अर्थात् पूरा होने वाले पुराने कल्प में और आरम्भ होने वाले नये कल्प में भी जाता है। तो दोनों संगम समय की प्राप्तियों में क्या भिन्नता है और कौनसी प्राप्तियाँ महान है?

विवेक कहता है कि नवयुग नये कल्प के आदि से ही कहा जायेगा अर्थात् नये कल्प के संगम समय को भी नवयुग ही कहा जायेगा। भले बाबा ने कहा है कि विकर्माजीत सम्वत् लक्ष्मी-नारायण के सिंहासन पर बैठने से आरम्भ होता है। प्राप्तियों की दृष्टिकोण से देखें तो पुराने कल्प के संगम समय की प्राप्तियाँ महान हैं क्योंकि उस समय परमपिता परमात्मा का साथ होता है, आत्मा को परमात्मा से

तीनों कालों, तीनों लोकों का ज्ञान मिलता है, आत्मायें अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करती हैं, आत्मा की चढ़ती कला होती है। नये कल्प के संगम समय में तो परमधाम से आने वाली आत्माओं की उतरती कला आरम्भ हो जाती है।

नवयुग के निर्माण में निराकार शिवबाबा और साकार ब्रह्मा बाबा दोनों का पार्ट है अर्थात् दोनों एक सिक्के के दो पहलू हैं। शिवबाबा ज्ञान का सागर, सर्वशक्तिवान है तो ब्रह्मा बाबा अनुभवों का सागर है अर्थात् उसको सारे कल्प का अनुभव है। सुख-दुख, मान-अपमान, निन्दा-स्तुति, हार-जीत, पुरुषार्थ-प्रॉलब्ध आदि सबका अनुभव ब्रह्मा बाबा को ही है। शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा दोनों मिलकर नवयुग का निर्माण करते हैं। दोनों का पार्ट अलग-अलग होते हुए भी एक संगम समय पर एक साथ चलता है। इसलिए दोनों ही नवयुग निर्माता हैं।

फर्स्ट पार्ट में परमात्मा का साथ है, तीनों लोकों और तीनों कालों का ज्ञान है, चढ़ती कला है, सतयुग का फाउण्डेशन का लग रहा है, एडवान्स पार्टी में आत्मायें जाती रहती हैं। तमोप्रधानता से सतोप्रधानता का फाउण्डेशन लग रहा है। फर्स्ट पार्ट के अन्त में फर्स्ट नव-युग निर्माता शिवबाबा का पार्ट पूरा हो जाता है। अतीन्द्रिय सुख अर्थात् आनन्द का समय पूरा होता है। पुरानी दुनिया की सफाई होती रहती है।

सेकण्ड पार्ट में विनाश के बाद प्रकृति सतोप्रधान हो जाती है, वहाँ एड-वान्स पार्टी की आत्मायें भी साथ रहती हैं, राजाई का कॉन्सट्रक्शन और उसकी तैयारियाँ होती हैं। नये कल्प की आदि से ही सतोप्रधानता का कार्य पूरा होकर उतरती कला आरम्भ हो जाती है परन्तु उस समय की एडवान्स पार्टी की आत्माओं की उतरती कला नहीं होती है। सेकण्ड पार्ट के आरम्भ होने से सेकण्ड नव-युग निर्माता अर्थात् ब्रह्मा बाबा का श्रीकृष्ण के रूप में पार्ट चालू रहता है। भौतिक सुखों का समय आरम्भ होता है। नई दुनिया का निर्माण होता है। ज्ञान का पार्ट भी पूरा हो जाता है।

संगमयुग और संगमयुग की प्राप्तियाँ

"बापदादा यही चाहते हैं कि एक-एक बच्चा अभी संगमयुग का सुख, संगमयुग की सभी प्राप्तियों के अनुभवी बनें। अपने आपको चेक करना कि हर प्राप्ति, हर शक्ति, हर ज्ञान के राज़ को, योग की हर विधि को, धारणा में भी हर धारणा में अनुभवी बना हूँ?... कोई भी प्राप्ति में कम हो गये तो ड्रामानुसार परीक्षायें भी समय अनुसार वे ही आयेंगी। इसलिए सब सब्जेक्ट में सम्पन्न और सम्पूर्ण की चेकिंग करो और चेन्ज करो।" अ.बापदादा 31.12.10

संगमयुग परम-प्राप्तियों का युग है। इस संगमयुग पर आत्मा को जो प्राप्तियाँ होती हैं, वे सारे कल्प में नहीं हो सकती है। यह एक ही संगमयुग है, जो चढ़ती कला का युग है, और तो सारे कल्प आत्मा और विश्व की उतरती कला ही होती है। जो इस संगमयुग की प्राप्तियों को जानता है, वह इसके परम सुख को स्वयं भी अनुभव करता है और दूसरों को भी कराता है।

"बापदादा को यही खुशी है कि बच्चे कलियुग में रहते भी जो बाप द्वारा प्राप्ति हुई है, उसका अनुभव अब संगम पर करेंगे। दुनिया के लिए अभी कलियुग है लेकिन आपके लिए संगमयुग अर्थात् सर्व प्राप्तियों का युग है। परमात्म प्राप्तियाँ, सर्व शक्तियाँ, सर्व गुण, सर्व ज्ञान का खज़ाना जो अभी प्राप्त है, उसका प्रैक्टिकल में अनुभव करेंगे। अ.बापदादा 31.12.10

"बाप हर बच्चे को यही संकल्प दे रहे हैं - "निर्विघ्न भव, सेवाधारी भव"। जो बच्चे बाप के बन गये हैं, उन बच्चों को संगमयुगी ब्राह्मण जीवन का मज़ा अनुभव हो रहा है और होता रहेगा। ... बाप के वर्से के अधिकारी हैं, अतीन्द्रिय सुख में झूलते रहते हैं और आगे भी जो संकल्प किया, संस्कार पर विजयी बनने का, वे सभी आत्मायें कोटों में कोई, कोई में भी कोई बने हैं।" अ.बापदादा 31.12.10

"इस संगमयुग पर ही ऐसा श्रेष्ठ भाग्य प्राप्त होता है, जो भविष्य में भी चलता रहता है। यह संगमयुग सर्व प्राप्तियों का युग है।... इस संगमयुग की महिमा आप बच्चे ही जानते हैं। संगमयुग की प्राप्तियाँ सारे कल्प में श्रेष्ठ से श्रेष्ठ हैं। बापदादा देख रहे हैं कि हर एक बच्चा इस संगमयुग की प्राप्तियों से कितना सम्पन्न है।"

अ.बापदादा 31.04.11

संगमयुग पर ही ज्ञान सागर परमात्मा आकर यथार्थ ज्ञान देते हैं और अनेक प्रकार की अनुभूतियाँ कराते हैं, जिससे आत्माओं और प्रकृति की चढ़ती कला होती है अर्थात् आत्मायें और प्रकृति तमोप्रधान से सतोप्रधान बनती है। अध्ययन की दृष्टि से संगमयुग की अनन्त प्राप्तियों को दो भागों में विभाजित किया है, जिससे वे प्राप्तियाँ हमारी बुद्धि में सहज रीति स्पष्ट रहें। इन दो भागों में एक है ज्ञान पक्ष और दूसरा है अनुभूति पक्ष।

ज्ञान पक्ष में

"सर्व सम्पत्ति से श्रेष्ठ खज़ाना ज्ञान धन है, जिससे सर्व धन की प्राप्ति स्वत: ही हो जाती है।... खज़ानों के भण्डारे भरपूर हैं? इतने भण्डारे भरपूर हैं, जो सदा महादानी बनकर दान करते रहो, तो भी अखुट भण्डार हो।" अ.बापदादा 7.05.83

"अभी तुमको कितनी अच्छी नॉलेज मिलती है।... जिनकी बुद्धि में यह नॉलेज टपकती रहेगी, उनको अपार खुशी होगी। ... तुमको नॉलेज देने वाला बाप है, वह कितना बड़ा नॉलेजफुल है। तुम कितना मर्तबा पाते हो, तो तुमको कितनी खुशी होनी चाहिए। ... सदैव बुद्धि में यह ज्ञान टपकता रहे तो तुम खुशी में रहेंगे, सदा फिकर से फारिग हो जायेंगे।" सा.बाबा 3.10.2001 रिवा.

ज्ञान सागर बाबा ने हमको इस विश्व-नाटक के अनेकानेक गुह्य ते गुह्य रहस्यों का ज्ञान दिया है, जो हमारे जीवन की सफलता के लिए परमावश्यक बातें हैं। परमात्मा ने जिन-जिन गुह्य रहस्यों का ज्ञान दिया है, उन पर विचार करें तो हम इस विश्व-नाटक के परम-सुख में खो जायेंगे, इस जीवन में परमानन्द का अनुभव करेंगे। उसमें विशेष हैं -

कल्प के संगम का ज्ञान, जिसको पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है।
आत्मा का ज्ञान
परमात्मा का ज्ञान
विश्व-नाटक का ज्ञान
सृष्टि-चक्र का ज्ञान
सृष्टि-चक्र के त्रिकाल का ज्ञान

सृष्टि-चक्र के हू-ब-हू पुनरावृत्ति का ज्ञान
त्रिलोक का ज्ञान
कल्प-वृक्ष का ज्ञान
कर्मों की गुह्य-गति का ज्ञान
योग और योग के विधि-विधान का ज्ञान
पवित्रता और ब्रह्मचर्य के महत्व का ज्ञान
विश्व-नाटक आध्यात्मिक-भौतक विधि-विधानों का ज्ञान
सृष्टि-रचना का राज़ - जिसको जानने के लिए वैज्ञानिक लाखों के लाखों करोड़ रुपया खर्च कर रहे हैं।
विभिन्न धर्मों की स्थापना का ज्ञान
परमात्मा और धर्म-पिताओं के परकाया प्रवेश का ज्ञान
आत्मा और प्रकृति की चढ़ती कला और उतरती कला का ज्ञान
इसके अतिरिक्त अन्य अनन्त विषयों और बातों का ज्ञान बाबा ने दिया है, जिनका वर्णन करें तो बड़ा ग्रन्थ बन जायेगा।

अनुभूति पक्ष में

बाबा ने हमको जो ज्ञान दिया है और अनेक प्रकार की अनुभूतियाँ कराई हैं, जिन अनुभूतियों के आधार पर इस ब्राह्मण जीवन की महानता है, जिसके कारण इस जीवन में परमानन्द का अनुभव होता है। बाबा ने ये भी कहा है - अनुभव सबसे बड़ी अथॉरिटी है, जिस अथॉरिटी के आगे सब झुक जाते हैं।
"संगमयुग है ही अनुभव करने का युग। इस युग में सर्व प्राप्तियों का अनुभव कर सकते हो। अभी जो अनुभव कर रहे हो, वह सतयुग में भी नहीं होगा। ... अनुभवी आत्मायें कभी माया से धोखा नहीं खा सकती हैं।"

अ.बापदादा 26.4.84 पार्टी 2

"अतीन्द्रिय सुख संगम पर ही गाया जाता है। जब बाप आते हैं तो उनका संग होता है, तो वह सुख भासता है।" सा.बाबा 16.08.69 रिवा.

बाबा ने जो अनुभव कराये हैं, उनमें विशेष हैं -
आत्मा के यथार्थ स्वरूप का अनुभव
परमात्मा के निराकार और साकार स्वरूप का अनुभव
परमात्मा के वरदानी स्वरूप का अनुभव
योगानन्द का अनुभव
गोपी बल्लभ के गोप-गोपी स्वरूप का अनुभव
परमानन्द अर्थात् अतीन्द्रिय सुख का अनुभव
मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ और सुखद अनुभव
विश्व-नाटक और उसमें पार्टधारी पन का अनुभव
यथार्थ साक्षी स्थिति का अनुभव
अमरत्व का अनुभव
बेग़मपुर के बादशाह पन का अनुभव
परमात्म-प्यार का अनुभव
परमात्म-पालना का अनुभव
परमात्म-गोद के सुख का अनुभव
परमात्म सानिध्य का अनुभव
परमात्मा की मदद का अनुभव
परमात्मा के भाग्य-विधाता स्वरूप का अनुभव
परमात्मा से मात-पिता, बन्धु-सखा सर्व सम्बन्धों का अनुभव
खुदा दोस्त का अनुभव
ईश्वरीय पर्सनॉलिटी और रॉयलिटी का अनुभव
परमात्मा के वारिसपन का अनुभव
परमात्मा को वारिस बनाने का अनुभव
रुहानी आशिक-माशूक का अनुभव
परमात्मा के ग़रीब-निवाज़ स्वरूप का अनुभव
ईश्वरीय और दैवी गुणों-शक्तियों का अनुभव
परमात्मा की मदद का अनुभव

परमात्मा को मदद का अनुभव - संगमयुग आत्मायें परमात्मा की कैसे मदद करती हैं अर्थात् परमात्मा के दिव्य कर्तव्य में कैसे सहयोगी बनती हैं, वह भी विशेष अनुभव है।

परमात्म-छत्रछाया का अनुभव
परमात्मा के दिल-तख्त का सुखद अनुभव
परमात्मा पर बलिहार होने का अनुभव
इन्द्र सभा का अनुभव
गॉडली स्टूडेण्ट्स लाइफ का अनुभव
वसुधैव कुटुम्बकम् का अनुभव
सर्व प्राप्ति सम्पन्न सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव
विश्व-नाटक के विधि-विधान का अनुभव
आदि-आदि

संगमयुग के अनुभव तो अनन्त हैं, उन सबको लिखने में लेखनी भी कुण्ठित हो जाती है। उन अनुभवों पर यथार्थ रीति विचार करें तो परमात्म-संग से जो अनुभव होता है, उस अनुभव को संक्षेप में कहें तो दिल में यही आता है - तुम हो तो पिया सबकुछ है, वरना ये चमन बेग़ाना है। इसलिए यहाँ कुछ प्राप्तियों और अनुभूतियों का ही यहाँ वर्णन किया है।

परमात्मा और परमात्मा से प्राप्त यथार्थ ज्ञान जीवन की सर्वश्रेष्ठ प्राप्ति है, जो संगमयुग पर ही आत्माओं को प्राप्त होता है और उस ज्ञान को पाकर उसकी जीवन में धारणा कर उसकी यथार्थता को अनुभव करना सबसे श्रेष्ठ अनुभूति है, जो अनुभूति सतयुग तो क्या सारे कल्प में त्रिलोक और त्रिकाल में नहीं हो सकती है। इसलिए जो संगमयुग पर इन अनुभूतियों को करता है, वह कभी सतयुग की लालसा में नहीं रहता है। ड्रामा अनुसार सतयुग आना निश्चित है, परन्तु संगमयुग की प्राप्ति का अनुभव न कर सतयुग की लालसा में जीना आत्मा की बड़ी भूल है, यथार्थ को भूल परछाई के पीछे भागना है। सतयुग की प्राप्तियाँ और अनुभूतियाँ तो संगमयुग की प्राप्तियों और अनुभूतियों की परछाई मात्र है, उसका प्रतिफल हैं।

संगमयुग पर परमात्मा से परम-प्राप्तियाँ अर्थात् सर्व प्राप्तियाँ हर आत्मा

को, जो अभी उनकी बनी है, उनको प्राप्त हुई हैं, जो आत्मा अपनी प्राप्तियों को देखकर, उनका सुख अनुभव करता है, वह सदा सुखी है। उसके जीवन में कोई अप्राप्ति का अनुभव हो नहीं सकता है। इसलिए कहा गया है - अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के जीवन में। परन्तु जो दूसरों की प्राप्तियों को देखता, उनके चिन्तन में रहता, वह कभी अपनी प्राप्तियों का अनुभव नहीं कर पाता है। बाबा ने अनेक बार कहा है - तुम अपनी प्राप्तियों को देखो, उनका सुख लो, दूसरों की प्राप्तियों का चिन्तन नहीं करो। एक मुरली में बाबा ने कहा है - तुम्हारी ऑख कभी भी दूसरों की कमाई में नहीं जानी चाहिए, तुम अपनी कमाई करो।

"सभी बच्चों का बाप समान बनने का लक्ष्य है तो जैसे ब्रह्मा बाप जीवन में रहते सदा जीवनमुक्त थे... इतनी सेवा की जिम्मेवारी सम्भलना, सेवा में बच्चों को आगे बढ़ाना, सब कुछ जिम्मेवारी होते भी जीवनमुक्त के मजे में रहा।... जीवन-मुक्त बन अभी जीवनमुक्त का मज़ा लिया और आप सभी बच्चों को भी ऐसा ही बनाया। आप भी इसी जीवन में जीवनमुक्त जीवन का सेम्पुल बनेंगे।"

अ.बापदादा 18.1.11

"यह भाग्य इस संगम पर ही मिलता है और चलता है। संगमयुग का सुख सब युगों से श्रेष्ठ है। सतयुग का भाग्य भी संगम के पुरुषार्थ की प्रॉलब्ध है, इसलिए संगमयुग की प्राप्ति सतयुग की प्रॉलब्ध से भी ज्यादा है। अपने भाग्य में खो जाओ।..."पाना था वह पा लिया"... फलक से कहते हो - कोई अप्राप्त वस्तु ही नहीं।... जहाँ सर्व प्राप्ति है, वहाँ असन्तुष्टता का नाम नहीं है।"अ.बापदादा 2.02.11

"उमंग-उत्साह अविनाशी है ना! इसलिए बापदादा इस श्रेष्ठ संगमयुग को उत्सव का युग कहते हैं। संगम का हर दिन आपके लिए उत्साह सम्पन्न है, हर दिन उत्सव है।"

अ.बापदादा 26.02.95

संगमयुग की प्राप्तियाँ और सतयुगी प्राप्तियाँ - दोनों में अन्तर

परमपिता परमात्मा संगमयुग पर ही आकर सतयुग की स्थापना करते हैं, इसलिए यह संगमयुग परम-प्राप्तियों का युग है। यह पुरुषोत्तम संगम युग अनन्त प्राप्तियों से परिपूर्ण है, जिन प्राप्तियों के आधार पर ही संगमयुग में पतित शरीर

होते भी आत्मा अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करती है और आत्मा की चढ़ती कला होती है। सतयुग में लक्ष्मी-नारायण का जीवन सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी होते भी उतरती कला का जीवन है। उनके जीवन में भौतिक सुख है, परन्तु अतीन्द्रिय सुख अर्थात् आनन्द नहीं है। अतीन्द्रिय सुख और आनन्द संगमयुग की विशेष प्राप्ति है, जिसका आधार यथार्थ ज्ञान और परमात्मा का संग है। वास्तविकता को देखें तो सारे वेद-शास्त्र, उपनिषद, गीता, महाभारत, भागवत, रामायण आदि और अन्य धर्म-ग्रन्थों में संगमयुग की प्राप्तियों का ही वर्णन है और उन प्राप्तियों के अनुभव के आधार पर और उसके कारण ही कलियुग में सभी आत्मायें किस न किस रूप में परमात्मा को याद करते हैं। संगमयुग और संगमयुग की प्राप्तियाँ ही सारे कल्प की प्राप्तियों का आधार हैं।

संगमयुग की प्राप्तियों और सतयुग की प्राप्तियों का तुलनात्मक अध्ययन

Q. प्रजापिता ब्रह्मा और उनके बच्चों की प्राप्तियाँ महान कही जायेंगी या श्रीकृष्ण और उनके साथियों की प्राप्तियाँ महान कही जायेंगी और क्यों?

सतयुग के सुख का आधार भौतिक सुख-साधन और सामग्री हैं, जो विनाशी है, इसलिए वहाँ का सुख भी विनाशी ही है अर्थात् उतरती कला का सुख है परन्तु संगमयुग का सुख आत्मा-परमात्मा-ड्रामा के यथार्थ ज्ञान और परमात्मा के संग पर आधारित है, जो अविनाशी हैं, इसलिए वह सुख अविनाशी अर्थात् चढ़ती कला का सुख है। भल देवताओं के जीवन में कोई दुख नहीं है, परन्तु जीवन उतरती कला का है और वे उतरती कला में होते भी उतरती कला का अनुभव नहीं करते हैं। ब्राह्मणों को पतित, पुरानी दुनिया में होते भी यह सब ज्ञान है।

सतयुग के सुख और सुख-साधनों पर उपयोगिता ह्रास का सिद्धान्त प्रभावित होता है, परन्तु संगम के सुख पर वह प्रभावित नहीं होता है। संगम के सुख पर उपयोगिता विकास का सिद्धान्त प्रभावित होता है अर्थात् जितना संगम के सुखों में गहरे जाते हैं, उतना और रतन मिलते हैं, जिससे उस सुख की उपयोगिता बढ़ती जाती है अर्थात् उनसे प्राप्त होने वाले आनन्द की अनुभूति गहरी होती जाती है।

सतयुग में सुख होता है, आनन्द नहीं अर्थात् सतयुग का सुख इन्द्रीय सुख होता है। आनन्द या अतीन्द्रिय सुख की संज्ञा संगम के सुख को ही दी जाती है, जो इन्दिय सुखों से परे होने पर ही आत्मा को अनुभव होता है। इसलिए गोप-गोपियों का ही अतीन्द्रिय सुख गाया हुआ है, जो संगमयुग की ही प्राप्ति है।

सतयुग में न परमात्मा का ज्ञान होगा और न ही परमात्मा का साथ होगा। सतयुग में फरिश्ता स्वरूप का भी अनुभव नहीं होगा। वहाँ केवल आत्मा की सतोप्रधान स्थिति होने के कारण प्रकृति प्रदत्त इन्द्रिय सुख-साधनों की भरमार होगी और आत्मा उन सुख-साधनों का उपभोग करेगी, परन्तु वे सुख भी आत्माओं को नम्बरवार संगमयुग के किये गये पुरुषार्थ के आधार पर ही प्राप्त होते हैं।

मुक्ति-जीवनमुक्ति हर आत्मा का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है, जो हर आत्मा को उसके पार्ट अनुसार मिलता है, परन्तु मुक्ति-जीवनमुक्ति के सुख का यथार्थ अनुभव अभी संगमयुग पर ही होता है, जिसके लिए बाबा ने अनेक बार मुरलियों में कहा है - मुक्ति-जीवनमुक्ति का मज़ा अभी है, जब आत्मा में जीवनबन्ध का भी अनुभव है, उसका ज्ञान है। मुक्तिधाम में तो आत्मा को कोई अनुभव ही नहीं होगा क्योंकि शरीर ही नहीं होगा और जीवनमुक्ति धाम अर्थात् सतयुग में जीवनबन्ध का ज्ञान न होने के कारण उसका कोई अनुभव नहीं होगा कि हम जीवनमुक्ति में हैं। केवल वहाँ सर्व भौतिक सुख होंगे, दुख-अशान्ति नहीं होगी। इसलिए बाबा सदा ही कहते हैं कि जीवनमुक्त स्थिति के सुखों में रहो।

संगमयुग पर खड़ी आत्मा तीनों लोकों और तीनों कालों अर्थात् कलियुग, संगमयुग, सतयुग और साकार वतन, सूक्ष्मवतन और शान्तिधाम तीनों को देखती है। संगमयुग की इस स्थिति के यादगार में ही भक्ति में टिवाटे की पूजा होती है, त्रिलोकीनाथ, त्रिकालदर्शी का गायन है। सतयुग में आत्मा केवल वर्तमान को ही देखती है, परन्तु संगमयुग पर तीनों लोकों को देखती है और तीनों कालों को जानती है अर्थात् आत्मा तीनों लोकों और तीनों कालों का अनुभव करती है। तीनों लोकों और तीनों कालों को जानते हुए अभी हम पुरानी दुनिया को भूलते हैं क्योंकि यह विनाश होने वाली है और शान्तिधाम एवं नई दुनिया को याद करते हैं, जहाँ अभी हमको जाना है। सतयुग भौतिक प्राप्तियों का युग है, संगमयुग ईश्वरीय

प्राप्तियों का युग है, जो सतयुगी प्राप्तियों का आधार हैं।

संगमयुग और सतयुग की प्राप्तियों पर विचार करें तो संगमयुग परम प्राप्तियों का युग है, जो इस संगमयुग की प्राप्तियों को सही रीति जानता है और उनका अनुभव करता है, उसको सतयुग के सुख की न लालसा होगी और अधिक उत्सुकता होगी। हाँ, उसके लिए पुरुषार्थ अवश्य करेगा क्योंकि संगमयुग पर पुरुषार्थ ही जीवन है, पुरुषार्थ ही प्रॉलब्ध है अर्थात् संगमयुग के पुरुषार्थ में ही प्रॉलब्ध का सुख अनुभव होता है। संगमयुग के सुखों को न अनुभव करके, सतयुग के सुखों की आशा में जीना भी अपने को धोखा देना ही है अर्थात् यथार्थ ज्ञान नहीं है।

Q. *बापदादा क्या चाहते हैं?*

बापदादा चाहते हैं कि हर बच्चा ब्रह्मा बाप समान सदा संगमयुग की परमप्राप्तियों की अनुभूति में रहे अर्थात् ब्रह्मा बाप समान सदा स्वराज्य अधिकारी, सदा सम्पन्न जीवनमुक्त स्थिति की अनुभूति में रहे और सर्वात्माओं को अपने भाग्य और संगमयुग की परम-प्राप्तियों की अनुभूति अपनी चलन, चेहरे, वृत्ति-वायब्रेशन से कराये।

ब्रह्मा बाप के जीवन पर विचार करें तो वे परमात्मा पिता के साथ और विश्व-नाटक के ज्ञान की यथार्थ धारणा से सदा ही बेफिकर बादशाह, जीवनमुक्त स्थिति की अनुभूति में रहे, सर्व प्राप्तियों से सदा सम्पन्न और सन्तुष्ट, टेन्शन-फ्री, व्यर्थ से मुक्त, स्वराज्य अधिकारी बनकर रहे और अपने दृष्टि-वृत्ति-वायब्रेशन से हम सबको उसका अनुभव कराया। भल यज्ञ में विघ्न आये परन्तु वे विघ्नों से कभी घबराये नहीं, धैर्यपूर्वक रहकर सहज विघ्नों पर विजय पायी। यही संगमयुगी जीवन की परम-प्राप्तियाँ हैं और बाबा चाहते कि हर बच्च सदा ब्रह्मा बाप समान इन अनुभूतियों में रहे और सबको करायें।

संगमयुग की प्राप्तियों की अनुभूति में रहने के लिए संगमयुग के कर्तव्य में बिजी रहना अति आवश्यक हैं। इसलिए दोनों का ज्ञान परमात्मा ने दिया है और उसका अनुभव कराया है, वह हर आत्मा की बुद्धि में होगा, तब ही वह उनका अनुभव कर सकेगा और दूसरों को करा सकेगा। संगमयुग का मूल कर्तव्य है देह

और देह की दुनिया को भूल अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित रहना और दूसरों को अपनी वाणी, वृत्ति-वायब्रेशन से उसके आत्मिक स्वरूप का अनुभव कराना। आत्मिक स्वरूप स्वत: में परम-प्राप्तियों से सम्पन्न है, परम-शान्त, परम-शक्ति सम्पन्न, परमानन्दमय है। संगमयुग पर जो अपनी प्राप्तियों को देखता है, अनुभव करता है, वही संगमयुग के सुखों का अनुभव कर सकता है और संगमयुग के कर्तव्य को कर सकता है। जो दूसरों की प्राप्तियों को देखता है, उनके चिन्तन में रहता है, वह कभी भी संगमयुग की प्राप्तियों की अनुभूति नहीं कर सकता है। यह वैराइटी ड्रामा है, इसमें सबका वैराइटी पार्ट है, उस अनुसार सबको अपनी-अपनी प्राप्तियाँ हैं। इसलिए बाबा सदा ही कहता है स्व-चिन्तन में रहो, पर-चिन्तन नहीं करो।

बापदादा यही चाहते हैं कि सभी बच्चे अपनी वर्तमान प्राप्तियों अर्थात् परम-शान्ति, परम-शक्ति, परमानन्द, परम-सुख की अनुभूति में सदा रहें और मन्सा-वाचा-कर्मणा, समय-स्वांस-संकल्प इस ईश्वरीय सेवा में सफल करें और अपने भविष्य के लिए श्रेष्ठ भाग्य को संचित करें।

आत्मिक शक्ति सम्पन्न आत्मा खूँखार जानवरों और व्यक्तियों के बीच रहते भी सदा स्वतन्त्रता से निश्चिन्त रहती है। बाबा ने अनेक बार मुरलियों में कहा है कि जब सन्यासियों में आत्मिक बल था, तो वे जंगलों में निश्चिन्त रहते हुए अपनी तपस्या करते थे। उनको जानवारों से भी कोई भय नहीं होता था।

"अभी ब्रह्मा बाप बच्चों को आप समान फरिश्ता स्थिति में रहने के लिए इशारे दे रहे हैं।... सब कुछ जिम्मेवारी होते भी जीवनमुक्त के मज़े में रहा।... जीवनमुक्त बन अभी जीवनमुक्त का मज़ा लिया और आप सभी बच्चों को भी ऐसा ही बनाया। ... आप सब भी इसी जीवन में जीवनमुक्त जीवन का सेम्पुल बनेंगे।"

अ.बापदादा 18.01.11

"बापदादा से पूछते हैं बापदादा क्या चाहते हैं? बापदादा हर बच्चे से यही चाहते हैं कि हर एक बच्चा सदा स्वराज्य अधिकारी बनकर रहे।... हिम्मत आपकी, मदद बाप की है ही। अभी बापदादा यही चाहते हैं कि हर बच्चा हर कर्म में अपने स्वराज्य की सीट पर स्थित रहे।" अ.बापदादा 2.02.11

"बापदादा यही चाहते हैं कि एक-एक बच्चा अभी संगमयुग का सुख, संगमयुग की सभी प्राप्तियों के अनुभवी बनें।... कोई भी प्राप्ति में कम हो गये तो ड्रामानुसार परीक्षायें भी समय अनुसार वे ही आयेंगी। इसलिए सब सब्जेक्ट में सम्पन्न और सम्पूर्ण की चेकिंग करो और चेन्ज करो।"

अ.बापदादा 31.12.10

"बापदादा हर बच्चे को किस रूप में देखना चाहते हैं, जानते हो ना! बापदादा यही चाहते हैं कि हर बच्चा स्वराज्य अधिकारी राजा बनें। स्व के ऊपर अर्थात् कर्मेन्द्रियों के ऊपर, मन-बुद्धि-संस्कार के ऊपर राजा बन राज्य करे। भविष्य में तो राज्य अधिकारी बनेंगे लेकिन अभी स्वराज्य अधिकारी राजा बनें।... बापदादा हर एक बच्चे को स्वराज्य अधिकारी राजा रूप में देखना चाहते हैं।"

अ.बापदादा 31.4.11

- विश्व-नाटक की यथार्थता को जान निश्चयबुद्धि होकर निर्भय, निश्चिन्त, निर्संकल्प स्थिति में टेन्शन-फ्री होकर शिवशक्ति स्वरूप की स्मृति में स्वराज्य अधिकारी बन संगमयुग की परमप्राप्तियों को अनुभव करो और अपनी चलन और चेहरे से अन्य आत्माओं को अपने प्राप्ति स्वरूप का अनुभव कराओ अर्थात् मन्सा द्वारा विश्व-कल्याण की सेवा कर वर्तमान में परम-भाग्य का अनुभव करो और भविष्य के लिए श्रेष्ठ भाग्य का संचय करो। इस कर्तव्य के लिए सेकेण्ड में सब बातों को बिन्दु लगाकर निर्संकल्प होकर अपने बिन्दु स्वरूप में स्थित होने का सफल अभ्यास अति आवश्यक है।

- इस सत्य को यथार्थ रीति समझना है कि हमको इस श्रेष्ठ संगमयुगी जीवन का सुख लेने में, अपने समय-स्वांस-संकल्प को सफल कर भविष्य बनाने में व्यर्थ संकल्प मूल बाधा हैं, जो हमारे ही भूतकाल में किये गये कर्मों का परिणाम हैं, उसके लिए दूसरों को दोष देना बड़ी भूल है, अज्ञानता है। दूसरों को दोष देने से विकर्मों का खाता और बढ़ता जाता है। विश्व-नाटक के इस विधि-विधान को जानकर अपना दोष समझकर यथार्थ पुरुषार्थ कर इनसे मुक्त होंगे और इस ईश्वरीय जीवन अर्थात् संगमयुगी श्रेष्ठ जीवन का सच्चा सुख अर्थात् परमानन्द अर्थात् अतीन्द्रिय सुख अनुभव कर सकेंगे। ड्रामा के ज्ञान की यथार्थ धारणा ही

आत्मा को निर्संकल्प बनाती है वा साक्षी होकर इस विश्व-नाटक का सच्चा सुख अनुभव कराती है और श्रेष्ठ कर्म करने में सहयोगी बनती है।

"बाप चाहते हैं कि हर महारथी बच्चा, निमित्त बच्चे, जो औरों को भी अपने चेहरे द्वारा बाप का साक्षात्कार कराने वाले हैं, उन्होंके चेहरे और चलन से बाप का प्रकाशमय चेहरा और साथ में बाप जैसी न्यारी और प्यारी चलन का साक्षात्कार होता रहे।... ब्रह्मा बाप ने सूरत से, वचन से, विशेष नयन और मस्तक से बाप को प्रत्यक्ष किया।... ऐसे फॉलो फादर।"

अ.बापदादा 13.04.11

"ब्रह्मा बाप ने सदा अपने नयनों में, मस्तक में बाप को समाया। तो आपके विशेष नयन, मुख, चलन बापदादा को समाया हुआ प्रत्यक्ष करें। हर बोल सिखाने वाला अनुभव हो। अनुभव करें कि यह जो भी बोल रही है, बोल रहा है, इसको सिखाने वाला, इसमें शक्ति भरने वाला सर्वशक्तिवान बाप है, भगवान है। ये भगवान के बच्चे हैं, भगवान के स्टूडेण्ट हैं, भगवान को फॉलो करने वाले फॉलोअर्स नहीं, लेकिन कदम में पदम बनाने वाले हैं।"

अ.बापदादा 13.04.11

Q.हम सदा संगमयुग की परम-प्राप्तियों की अनुभूति में रहें अर्थात् सदा ब्रह्मा बाप समान स्वराज्य अधिकारी, जीवनमुक्त स्थिति की अनुभूति में रहें, उसमें विघ्न क्या है, जो उस अनुभूति में रहने नहीं देता है?

आत्मिक स्वरूप सदा सम्पन्न और सम्पूर्ण परमानन्दमय है। जो आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होती है, वह उसका अनुभव अवश्य करती है और अन्य आत्मायें भी उससे वह अनुभूति करती हैं परन्तु हमारे पुराने विकारी संस्कार, इच्छा-आकांक्षायें उसमें रहने नहीं देते हैं। उसके लिए ज्वालारूप योग की परमावश्यक है।

"बापदादा कोई भी कर्म के फल की इच्छा नहीं रखते। ... यहाँ फल की प्राप्ति का संकल्प रहता है।... (जब यह संकल्प खत्म हो जायेगा तो) शरीर में होते भी निराकारी, आत्मिक रूप दिखाई देगा। जैसे साकार में देखा।"

अ.बापदादा 28.07.72 पंजाब पार्टी

Q.ज्वाला रूप योग क्या है, उसकी अनुभूति क्या है?

ज्वाला रूप योग अर्थात् जिसमें यह देह और देह की दुनिया भूल जाये और आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो। जिसके लिए हठयोगी निर्संकल्प समाधि के रूप में पुरुषार्थ करते हैं, परन्तु वहाँ आत्मिक स्वरूप का यथार्थ ज्ञान नहीं होता है, इसलिए वह स्थिति दीर्घकाल तक नहीं रहती है। वह इस ज्वालारूप योग की यादगार मात्र है।

"योग लगाते हो, अमृतवेले बैठते हो, लेकिन ज्वालामुखी योग हो, उसकी कमी है।... और दूसरा ज्वालामुखी अग्नि स्वरूप योग की शक्ति न होने में या कमी होने में संस्कार जो बीच में विघ्न डालते हैं, वे संस्कार समाप्त नहीं हुए हैं।... लगातार योग अग्नि ज्वालारूप हो, जिसमें संस्कार जलकर भस्म हो जायें।... तो अगली सीज़न में जब आयेंगे तो क्या खुशखबरी सुनायेंगे? संस्कार का संस्कार हो गया।"

अ.बापदादा 13.04.11

"बेहद का बाप अभी आया हुआ है। बाप कल्प-कल्प आते हैं। हमारा राज्य भाग्य माया रावण ने छीन लिया, बाप आकर हम आत्माओं को वह फिर से देते हैं। ऐसे नहीं कि कोई लड़ाई से छीना गया है। नहीं, रावण राज्य में हमारी मत भ्रष्टाचारी हो जाती है, तो हमारा राज्य भाग्य खत्म हो जाता है।... तुम बच्चों की बुद्धि में कितनी खुशी होनी चाहिए, सदा अतीन्द्रिय सुख में रहना चाहिए।"

सा.बाबा 6.05.11 रिवा.

मन्सा सेवा

मन्सा सेवा और उसका विधि-विधान

मन्सा सेवा के लिए यह अति आवश्यक है कि मन्सा शक्तिशाली हो अर्थात् मन्सा में सर्व शक्तियों का भण्डार भरपूर हो, जो यथार्थ ज्ञान की धारणा और आत्मिक स्वरूप में स्थित होने के सफल अभ्यास से ही सम्भव है क्योंकि जिसके पास धन होगा, वही दान कर सकेगा।

"बापदादा को बच्चों (दुखी-अशान्त आत्माओं का) का पुकारना, चिल्लाना सहन नहीं होता है। ... तो अब रहमदिल बनो। साथ में यह संकल्प भी रखो कि चलते-फिरते, अमृतवेले आत्माओं की मन्सा सेवा भी अवश्य करेंगे। ... जैसे पुराने संस्कार को समाप्त कर बाप समान बनेंगे, ऐसे दाता के बच्चे बन मास्टर दाता स्वरूप से आत्माओं की मन्सा सेवा करनी है।"

अ.बापदादा 31.12.10

"सारे दिन में जो भी समय मिले, उसमें मन्सा सेवा जरूर करना क्योंकि आप बच्चों को ही सुखमय संसार लाना है। आप बच्चों को इसी सेवा के लिए राइट हेण्ड बनाया है।... वे चिल्ला रहे हैं दो-दो तो आप दुखियों को सुख दे, परेशान को कुछ शक्ति देकर पुण्य का काम करो। अभी आप बच्चे जिन्होंने अपने आपको जाना है, बाप को जाना है, वर्से के अधिकारी बने हैं, तो दूसरों को भी बनाओ।"

अ.बापदादा 31.12.10

"अभी वाचा सेवा के साथ मन्सा द्वारा अनेक आत्माओं को सुख की किरणें, शान्ति की किरणें, खुशी की किरणें, प्रेम की किरणें पहुँचाने की सेवा भी करो।... आगे चलकर इसकी बहुत आवश्यकता पड़ेगी, इसलिए उस पर ध्यान देते रहो।... जो बच्चे ये मन्सा सेवा कर रहे हैं, उनको मुबारक है और जो नहीं कर रहे हैं, उनको करना चाहिए। आगे चलकर ऐसे सरकमस्टाँस बनेंगे जो सुनने वाले और सुनाने वालों का मिलना मुश्किल हो जायेगा।"

अ.बापदादा 24.10.10

"दुखी आत्मायें बहुत मन में चिल्ला रही हैं। मन्सा सेवा अभी ज्यादा बढ़ाओ।... आप उनको कुछ शान्ति दो, सुख की अनुभूति कराओ। वे एक सेकेण्ड की शान्ति

चाहते हैं।... तो अभी मन्सा सेवा को बढ़ाओ।"

अ.बापदादा 15.12.10

"तुमको रुहानी सेवा करनी है। बाप की याद ही है ऊंच ते ऊंच सेवा। मन्सा-वाचा-कर्मणा बुद्धि में बाप की याद रहे। मुख से भी ज्ञान की बातें सुनाओ। ... पहली बात अलफ को न समझने से और कुछ भी समझेंगे नहीं, इसलिए पहले अलफ पक्का कराओ, तब आगे बढ़ो।"

सा.बाबा 18.08.10 रिवा.

"अब तो आत्माओं को मन्सा द्वारा भी सेवा देने का समय है। सभी चिल्लाते रहते हैं - हे पूर्वज हमें थोड़ा सा सुख-शान्ति की किरणें दे दो। तो हे पूर्वज, दुखियों की पुकार सुनाई देती है?"

अ.बापदादा 2.02.11

"अभी एक बात करना, जो अपने मन को बिज़ी रखने के लिए, जैसे पहले बाप ने कहा सेकेण्ड में स्टॉप, बिन्दु हूँ, बिन्दु लगाना है और सबको बिन्दु रूप में देखना है। जब देखेंगे ही बिन्दु तो और कोई भी संकल्प चलेगा ही नहीं। ऐसे मन्सा सेवा का अटेन्शन रखना। दुखी-अशान्त आत्माओं को सुख-शान्ति की किरणें देने की सेवा में एक्स्ट्रा मन को लगाना। मन्सा सेवा बहुत श्रेष्ठ सेवा है। दुखियों का भी फायदा और आपका अपना भी फायदा।"

अ.बापदादा 17.02.11

सम्पूर्णता और सम्पन्नता से ही आत्मा में लाइट-माइट आती है, जो आत्मा देह से न्यारे अपने सम्पन्न और सम्पूर्ण स्वरूप अर्थात् बिन्दुरूप में स्थित होती है, वही सूर्य के समान लाइट-हाउस, माइट-हाउस, सर्चलाइट बन सर्वात्माओं की मन्सा सेवा कर सकती है।

"जो परमात्मा के संग के रंग में प्राप्त किया है, वह अपने भाई-बहनों को, भक्तों को खूब प्यार से, दिल से बांटो।... आप परमात्म बच्चों को दुखियों का सहारा बनना ही है। उनको शुभभावना और शुभकामना द्वारा, बाप से प्राप्त हुई किरणों द्वारा सहारा बनो। फिर भी आपका परिवार है ना।... योग ही साधन है सहारा देने का। बापदादा ने सन्देश भी भेजा था कि मन्सा सेवा का समय फिक्स करो।"

अ.बापदादा 16.03.11

"अपने कार्य और दिनचर्या प्रमाण समय फिक्स करो क्योंकि यह मन्सा सेवा अभी अति आवश्यक है। समय निकालो, रहमदिल बनो, कल्याणकारी बनो। आपका स्वमान क्या है? विश्व-कल्याणकारी।... इसमें अलबेले नहीं बनना क्योंकि जिनको आप सकाश देंगे, वे ही आपके भक्त बनेंगे।... आप पूर्वज हो। ब्राह्मण झाड़ में कहाँ बैठे हैं? नीचे बैठे हैं ना। तो सबके पूर्वज हो ना।"

अ.बापदादा 16.03.11

"अभी यह मन्सा द्वारा किरणें आत्माओं तक पहुँचाने को और शक्तिशाली बनाओ। इसके लिए जो विघ्न पड़ता है, पहुँचने में स्पष्ट न होने में कारण बनता है, वह है - योग लगाते हो, अमृतवेले बैठते हो, लेकिन ज्वालामुखी योग हो, उसकी कमी है। ... और दूसरा ज्वालामुखी अग्नि स्वरूप योग की शक्ति न होने में या कमी होने में संस्कार जो बीच में विघ्न डालते हैं, वे संस्कार समाप्त नहीं हुए हैं।"

अ.बापदादा 13.04.11

"विश्व की सभी आत्माओं को वाणी द्वारा सन्देश तो दे नहीं सकेंगे।... जैसे बाप भक्तों की भावना को सूक्ष्म रूप से पूर्ण करते हैं, तो क्या वाणी द्वारा सामने जाकर करते हैं? यह सूक्ष्म मशीनरी है।... मन्सा सेवा की सूक्ष्म मशीनरी तेज होने वाली है। यह अन्तिम सर्विस की रूपरेखा है। ... आपकी रुहानियत की शक्ति दूर बैठी आत्माओं की भी सेवा करेगी, तब ही प्रैक्टिकल में विश्व कल्याणकारी गाये जायेंगे।"

अ.बापदादा 4.08.72

"जब ऐसी सूक्ष्म सर्विस में लग जायेंगे तो विश्व कल्याणकारी का प्रैक्टिकल में नाम बाला होगा।... मास्टर बुद्धिमानों की बुद्धि बन सूक्ष्म मशीनरी द्वारा सभी की बुद्धियों को टच करेंगे तो आवाज़ फैलेगा कि कोई शक्ति, कोई रुहानियत अपने तरफ आकर्षित कर रही है। फिर ढूँढेंगे मिलने के लिए, एक सेकण्ड के दर्शन के लिए तड़फेंगे।... यादगार निशानी जड़ मूर्तियों के आगे भीड़ लगती है।"

अ.बापदादा 4.8.72

हम ईश्वरीय सन्तान है, इस ईश्वरीय यज्ञ के रक्षक हैं। यह यज्ञ इस सृष्टि में सभी जड़-जंगम-चेतन को पावन बनाने वाला है। ड्रामा अनुसार सभी आत्मायें कर्म करती हैं और उसका फल भोगती है, इसलिए हमको किसके विषय में सोचने

की आवश्यकता नहीं है, हमको निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति में रहना है, जिससे हमारी मन्सा शक्ति बढ़ेगी और हमको मुक्ति-जीवनमुक्ति के परमसुख का अनुभव होगा, तब हमारी मन्सा से जो वृत्ति और वायब्रेशन्स प्रवाहित होंगे, उनसे स्वत: ही मन्सा सेवा होगी अर्थात् जड़-जंगम-चेतन पर उनका प्रभाव होगा।

मन्सा सेवा का स्वरूप

1.देह और देह की दुनिया को भूल अपने मूल स्वरूप अर्थात् बिन्दुरूप में स्थित होकर लाइट-हाउस, माइट-हाउस बन सूर्य के समान अबाध रूप से विश्व में लाइट-माइट की किरणों को फैलाना, जो जड़-जंगम और चेतन सबको उनकी आवश्यकता अनुसार लाइट-माइट देती है, परिवर्तन करती हैं, शक्ति प्रदान करती हैं।

2.अपने मूल स्वरूप में स्थित होकर सर्च-लाइट के समान सारे विश्व में लाइट-माइट की किरणें फैलाना अर्थात् अपने मूल स्वरूप में स्थित होकर किसी विशेष आत्मा के प्रति, किसी विशेष स्थान पर आत्माओं को, किसी विशेष दिशा में शान्ति-शक्ति की किरणें देना।

3.साकार दुनिया से परे होकर फरिश्ता स्वरूप में स्थित हो फरिश्तारूप बाप साथ विश्व में भ्रमण करते हुए सर्वात्माओं और जड़-जंगम को लाइट-माइट देना।

4.ज्ञान की यथार्थ समझ और धारणा ऐसी हो, जो सदा सर्वात्माओं के प्रति शुभ-भावना, शुभ-कामना रहे, जिससे व्यवहार में आते हुए भी सदा शुभ-भावना, शुभ-कामना की वृत्ति और वायब्रेशन सदा फैलते रहेंगे और सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाली आत्माओं को उसकी अनुभूति होती रहे।

5.किसी विशेष आत्मा के कर्मभोग की वेदना को मिटाने के लिए भी मन्सा सेवा की जा सकती है अर्थात् अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमात्मा की याद में अपनी दृष्टि-वृत्ति, स्मृति, वायब्रेशन से उसकी वेदना की फीलिंग को कम किया जा सकता है, परन्तु इसके लिए विशेष समझ की अति आवश्यकता है क्योंकि संसार में अनेकानेक आत्मायें कर्मभोग से दुखी हैं। कहीं ऐसा न हो कि हम अपने मूल लक्ष्य से भटक जायें और हम अपनी सारी शक्ति, समय को इसी कार्य में लगा दें। क्योंकि जिन आत्मओं को उनके कर्मभोग से मुक्त करने की सेवा करेंगे, उनकी याद बुद्धि में जरूर रहेगी और इसमें मान-शान की माया आने की

भी बहुत मार्जिन है। इसलिए इसमें निस्वार्थ भाव परमावश्यक है। हमारा मूल लक्ष्य है आत्माओं की आध्यात्मिक सेवा करना, जिससे उनको अपने मूल स्वरूप की पहचान हो और कर्मभोग के कारण का पता लगे, जिससे वे स्वयं पुरुषार्थ कर उससे मुक्त हों। ये आत्माओं का कर्मभोग तो दिनोदिन और भी बढ़ना है क्योंकि आत्माओं का सारे कल्प का हिसाब-किताब चुक्ता होना है। जब आत्मओं को यथार्थ ज्ञान होगा, तो वे अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर स्वत: ही कर्मभोग से मुक्त हो जायेंगी। यह कहने का अर्थ ये नहीं कि हम ये सेवा न करें। सेवा करें परन्तु समझकर करें।

6.आत्मा को आत्मिक स्वरूप में देखना भी मन्सा सेवा है। इसीलिए बाबा कहते हैं तुम वाचा सेवा और मन्सा सेवा साथ-साथ करो अर्थात् हमारी दृष्टि-वृत्ति-वायब्रेशन से भी सेवा हो।

7.किसी आत्मा को सूक्ष्म में सामने इमर्ज करना और उसको दृष्टि देते हुए ज्ञान की रूह-रुहान करना भी मन्सा सेवा है, जिसको वह आत्मा भी अनुभव करेगी।

8.मन्सा सेवा में सफलता प्राप्त करने के लिए ये बात विशेष बुद्धि में याद रखने की है जैसे हमारे शुद्ध संकल्पों से, शुद्ध दृष्टि-वृत्ति से आत्माओं और जड़-जंगम प्रकृति की मन्सा सेवा होती है, उससे हमारा भाग्य जमा होता है, वैसे ही व्यर्थ-अशुद्ध चिन्तन से, अशुद्ध दृष्टि-वृत्ति से आत्माओं का और जड़-जंगम प्रकृति का अकल्याण भी होता है, जो हमारे जमा के खाते को कम भी करता है अर्थात् उससे हमारा मन्सा सेवा द्वारा जमा किया हुआ खाता कम भी होता है, इसलिए उस पर भी नियन्त्रण हो। इसलिए बाबा हमको सदा व्यर्थ से मुक्त होने की प्रेरणा, शिक्षा, सावधानी देते रहते हैं।

9.मन्सा सेवा करने से अपनी मन्सा भी शक्तिशाली बनती है और मन्सा सेवा में बिजी रहने से माया के वार से भी बच जाते हैं। इसलिए बाबा ने कहा है कि मन्सा सेवा से अपना भी भला होता है और अन्य आत्माओं का भी भला होता है।

जैसे साकार बाबा के जीवन से अनुभव किया कि उनका सारा जीवन ही लाइट-हाउस, माइट-हाउस के समान था और उनकी दृष्टि से सदा ही सर्च-लाइट का अनुभव होता था। उनके वृत्ति और वायब्रेशन से सम्पर्क में आने वाली

आत्मायें अशरीरी हो जाती थी और परमानन्द का अनुभव करती थी। ऐसे ही अव्यक्त बापदादा की जब पधरामणी होती है तो उनके रूप से स्पष्ट लाइट-हाउस, माइट-हाउस और सर्च-लाइट का अनुभव होता है। वे मुरली चलाते हैं या दृष्टि देते हैं, दोनों समय यह अनुभव होता है - यही मन्सा सेवा का प्रत्यक्ष स्वरूप है।

"नॉलेजफुल और पॉवरफुल दोनों का बैलेन्स ठीक न होने से अपने ऊपर ही ब्लिस नहीं कर सकेंगे तो अनेकों के लिए मास्टर ब्लिसफुल कैसे बन सकेंगे। अभी सभी ब्लिस के भिखारी हैं। ब्लिस के वरदानी वा महादानी शिव और शक्तियों के सिवाए कोई नहीं हैं। तो जिस चीज़ के महादानी वा वरदानी हो, वह पहले स्वयं में सम्पन्न होंगे, तभी तो दूसरों को दे सकेंगे ना।"

अ.बापदादा 8.06.72

"सारी सृष्टि में जो भी आपके भक्त हैं वा अनेक दुखी-अशान्त आत्मायें हैं, जो आपको याद कर रही हैं। ... पुकार रही हैं बचाओ-बचाओ, आवाज़ सुनने में आ रहा है! ऐसी आत्माओं को यहाँ बैठे हुए इमर्ज करो और उनको अपनी मन्सा शक्ति द्वारा सुख-शान्ति की किरणें पहुँचाओ। यह मन्सा सेवा सारे दिन में बार-बार करते रहो क्योंकि बाप के साथ आप बच्चे भी विश्व-सेवक हो।"

अ.बापदादा 17.02.11

Q.मन्सा सेवा का विधि-विधान क्या और उसके साधन एवं साधना क्या है?

मन्सा सेवा का विधि-विधान जानने वाला ही यथार्थ रीति मन्सा सेवा कर सकता है, जिससे उसको और सर्व आत्माओं को लाभ होता है। मन्सा सेवा के विधि-विधानों के विषय पर ज्ञान सागर परमात्मा ने समय प्रतिसमय विस्तार से बताया है और शिवबाबा ने अपने साकार माध्यम द्वारा उसका अनुभव भी कराया है। ब्रह्मा बाबा ने भी मन्सा सेवा के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ करके आत्माओं को पुरुषार्थ करने की प्रेरणा दी है और अभी अपने अव्यक्त रूप से भी दे रहे हैं।

सर्वात्माओं के प्रति शुभ-भावना, शुभ-कामना वाला ही मन्सा सेवा कर सकता है। उसके लिए आत्मा में सम्पन्नता और सम्पूर्णता चाहिए, जो विश्व-नाटक के विधि-विधानों को यथार्थ रीति जानने, निश्चय करने और उनकी धारणा से ही सम्भव है। क्योंकि ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी है, जो हू-

ब-हू पुनरावृत्त होता है, इसलिए हर आत्मा निर्दोष है। इसकी वास्तविकता पर विचार करें तो इसमें जो होता है, वह सदा अच्छा है। इसीलिए बाबा ने कहा है कि जो हुआ, वह अच्छा हुआ; जो हो रहा है, वह अच्छा है और जो होगा, वह भी निश्चित अच्छा होगा, इसलिए हमको न किसी बात का चिन्तन करना है और न किसी बात के लिए चिन्ता करना है। हमको बाबा की श्रीमत पर चलकर अपना संगमयुगी कर्तव्य पूरा करना है। मन्सा सेवा के लिए एकाग्रता अति आवश्यक है अर्थात् जब चाहें तब अपनी मन-बुद्धि को एकाग्र कर सकें।

मन्सा सेवा और बिन्दु रूप में स्थित होने के सफल अभ्यास के लिए स्थिति राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा, अहंकार-हीनता आदि से जनित व्यर्थ चिन्तन और चिन्ता से मुक्त होकर मान-अपमान, निन्दा-स्तुति, जय-पराजय, लाभ-हानि, प्राप्ति-अप्राप्ति, दुख-सुख, यश-अपयश, अपने-पराये के भेद से ऊपर दोनों स्थितियों में समान दृष्टि और स्थिति रखना अति आवश्यक है, जिसके लिए विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा एकमात्र आधार है। इसलिए ही ज्ञान सागर परमात्मा ने विश्व-नाटक का ज्ञान दिया है।

मन्सा सेवा के लिए हमारी मन्सा शक्तिशाली होनी चाहिए, इसलिए बाबा ने अनेक मुरलियों में कहा है - तुम्हारा ज्ञान-गुण-शक्तियों का स्टॉक भरपूर होना चाहिए, जिससे औरों को भी दे सको और अपनी स्थिति भी बनाकर रख सको अर्थात् अपनी स्थिति पर किसी व्यक्ति और वातावरण का प्रभाव न पड़े, हम अपनी आत्मिक स्थिति में रहकर सदा पवित्रता, सुख-शान्ति, शक्ति की अनुभूति में रहें, सदा परमानन्द का अनुभव करते रहें। ये स्थिति भी स्वत: मन्सा सेवा करती है क्योंकि इससे स्वत: ही पवित्रता, सुख-शान्ति का वायब्रेशन वातावरण में फैलता है। हमारी मन्सा से जो वायब्रेशन प्रवाहित होता है, उससे जड़-जंगम-चेतन तीनों प्राकृतियाँ प्रभावित होती हैं अर्थात् उसका जड़-जंगम और चेतन तीनों पर प्रभाव पड़ता है। हमारी मन्सा से जो जड़ प्रकृति प्रभावित होती है अर्थात् पावन बनती है, उससे हमको प्रकृति से वर्तमान में भी और भविष्य में भी सुख मिलता है, सुख-साधन प्राप्त होते हैं। मन्सा सेवा से चेतन आत्माओं को जो लाभ होता है, उससे हमारे चेतन आत्माओं के साथ मधुर सम्बन्ध बनते हैं, जो वर्तमान में भी

और भविष्य नई दुनिया में भी सुख देते हैं।

"कहावत है - मनजीते जगतजीत। मन को जो संकल्प दो, वही करे। जैसे और कर्मेनद्रियाँ जब चाहो, जैसे चाहो, वैसे करती हैं ना। ऐसे ही मन को भी जो आर्डर करो, वही करे।... मनजीते, जगतजीत का गायन आप बच्चों का ही तो है। हर कल्प किया है, तभी गायन है।... आप मालिक हो। मन में जो संकल्प करना चाहो, जितना समय वह संकल्प करने चाहो, उसके लिए मन बँधा हुआ है।... आज के दिन से व्यर्थ संकल्प को फुल-स्टॉप।"

अ.बापदादा 18.01.11

"आप लोग की हर चलन ही प्रत्यक्ष प्रमाण है। प्रत्यक्ष को कोई प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं रहती है।... फ्युचर में महाविनाश होने वाला है और नई दुनिया आने वाली है, वह भी आपके फीचर्स दे दिखाई दे। जब प्रत्यक्ष में देखेंगे तो वैराग्य ऑटोमेटिकली आ जायेगा। एक तरफ वैराग्य आयेगा और दूसरे तरफ अपना भविष्य बनाने का उमंग आयेगा।"

अ.बापदादा 28.07.72 पंजाब पार्टी

स्व-सेवा और विश्व-सेवा

"जैसे स्व की सेवा का अटेन्शन देते हो, ऐसे अपने भक्तों की और दुखी-अशान्त आत्माओं को सुख-शान्ति की किरणें देने की सेवा भी अटेन्शन देकर सारे दिन में करो।... सारे दिन में चेक करो कि जैसे स्व के प्रति समय देते हो, ऐसे इस मन्सा सेवा में कितना समय दिया। रहमदिल हो ना, तो दुखियों पर रहम करो।"

अ.बापदादा 17.02.11

उपर्युक्त चेकिंग के लिए यह समझना अति आवश्यक है कि स्व-सेवा में हमारा कौन-सा समय, संकल्प, श्वांस गिनती होगा और विश्व-सेवा में कौनसा गिनती होगा।

हर आत्मा की दिनचर्या में तीन प्रकार के कर्म होते हैं - एक अति आवश्यक कर्म। जैसे खाना-पीना, नहाना, सोना, मनोरंजन आदि। दूसरे कमाई के लिए किये गये कर्म और तीसरे हैं विश्व-कल्याणार्थ किये गये कर्म। इन तीनों प्रकार से किये गये कर्मों और इनमें प्रयोग किये गये संकल्प, स्वांस, समय से

आत्माओं का खाता जमा और ना होता है अर्थात् जमा का खाता बढ़ता-घटता है।

सतयुग-त्रेता में आत्मायें जो खाते-पीते, साधन-सम्पत्ति का अपने सुख के लिए उपयोग करते हैं, उससे भी आत्मा का जमा का खाता घटता जाता है, परन्तु वहाँ आत्मायें आवश्यकतानुसार बहुत कम उपयोग करते हैं, जिससे खाता बहुत कम घटता है।

द्वापर-कलियुग में आत्मायें जब देहाभिमानी बन जाते हैं, विकारों के वशीभूत हो जाते हैं तो जो खाते-पीते, साधन-सम्पत्ति का उपयोग करते हैं, उसमें विलासिता आने के कारण खाता तीव्रता से घटता जाता है। खाना-पीना, नहाना, सोना, मनोरंजन आदि करते हैं, उसमें राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, अहंकार-हीनता आ जाती है, जिसमें आत्मा का समय, संकल्प, श्वांस बहुत जाता है, जिसके कारण जमा का खाता तीव्रता से घटता है। पर-चिन्तन, परदर्शन से भी खाता घटता है।

सतयुग से लेकर अभी कलियुग के अन्त तक और इस संगमयुग पर भी हम जो ये उपर्युक्त कर्म करते, वह स्व-सेवा में ही गिनती होता है।

विश्व-सेवा के लिए - संगमयुग पर जब हम लाइट-हाउस, माइट-हाउस, सर्च-लाइट स्थिति में स्थित होकर संकल्प, वाणी, कर्म करते हैं, सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हैं, आत्म-चिन्तन, परमात्म-चिन्तन करते तो वह हमारा समय, श्वांस, संकल्प विश्व-सेवा में गिनती होता है। लाइट-हाउस, माइट-हाउस और सर्च-लाइट का प्रत्यक्ष स्वरूप ब्रह्मा बाबा और अव्यक्त बापदादा है। जीवन निर्वाह अर्थ जो कमाई करते हैं, उसमें जो हम अपने खाने-पीने, मनोरंजन आदि में जो खर्च करते, वह स्व-सेवा में हुआ और जो विश्व-सेवा अर्थ खर्च किया, वह विश्व-सेवा में गिनती होगा। अति आवश्यक कर्म भी परमात्मा की याद में करते हैं तो उससे भी विश्व-सेवा समाई हुई होती है। अब हम विचार करें कि हमारा कितना समय, संकल्प, समय स्व-सेवा में जायेगा और कितना विश्व-सेवा में जायेगा और हमारा भविष्य के लिए क्या जमा हुआ अर्थात् हमारा भाग्य क्या होगा।

हमारा समय, स्वांस, संकल्प स्व-सेवा में आवश्यकता से अधिक होगा, तो जमा कम होगा और कर्मभोग आदि भी होगा, अन्त समय सजायें आदि खानी

होगी। ये सब विश्व-सेवा में अधिक उपयोग करेंगे और जमा का खाता अधिक होगा तो हमको सन्तुष्टता होगी, खुशी होगी, कर्मभोग भी हल्का हो जायेगा।

अपने श्वांस, समय, संकल्प को आवश्यक रूप में, आरामदायक रूप मे और विलासितापूर्ण में प्रयोग करते हैं, तो उसका भी हिसाब है, उस अनुसार भविष्य के लिए खाता जमा होता है।

अब हम विचार करें कि नई दुनिया कितना दूर है, उसमें हमारा भाग्य क्या होगा? "अपने को परिवर्तन को लाने से सृष्टि परिवर्तन हो जायेगी। अपने परिवर्तन के आधार से ही सृष्टि में परिवर्तन लाने का कार्य कर सकेंगे। ... जितना-जितना स्वयं समर्थ बनेंगे, उतना ही सृष्टि के परिवर्तन का समय समीप ला सकेंगे। ड्रामा अनुसार भल निश्चित है, लेकिन वह भी किस आधार से तो बना है ना। आधारमूर्त आप हो।"

अ.बापदादा 2.08.72

"ज़रा भी फ्लो फेल कर देता है। लॉस्ट फाइनल पेपर में अगर ज़रा-सा फ्लो आ गया तो फेल हो जायेंगे, इसलिए पहले से पेपर होते हैं परिपक्व बनाने के लिए। ... सुनाया था ना कि अभी सूक्ष्म सर्विस की मशीनरी चालू होती है। तो मधुबन निवासियों से विशेष सूक्ष्म सर्विस की मशीनरी अब चालू हो गई है।... यह औषधि के रूप में जहाँ पहुँचाने चाहते हो वहाँ पहुँच रहा है।"

अ.बापदादा 19.9.72

Q.रहमदिल बाबा ने कहा है - सब आत्मायें बहुत दुखी हैं, तुम बच्चों को सर्व आत्माओं पर रहम आना चाहिए, उनको दुख-अशान्ति से मुक्त करना है - तो उन आत्माओं को उस दुख अशान्ति से कैसे मुक्त किया जा सकता है? क्या उनको जो कर्मभोग आदि है, विनाश आदि की परिस्थितियों को देख भय-चिन्ता है, परस्पर सम्बन्धों की कटुता है, हम उनको उससे मुक्त कर सकते हैं अर्थात् क्या हमारी मन्सा सेवा उनकी उन परिस्थितियों को बदल देगी? विवेक कहता है - हम उन परिस्थितियों को नहीं बदल सकते हैं। विचारणीय है कि क्या जिस विनाश की आशंका से उनको भय-चिन्ता है, हमारी मन्सा सेवा उस विनाश को टाल देगी। वास्तविकता ये है कि हमारी मन्सा सेवा उन आत्माओं की मानसिकता को बदल देगी, उनको परमात्मा के ज्ञान की ओर आकर्षण करेगी, हमारी मन्सा से वे

आत्मायें अपने आत्मिक स्वरूप का अनुभव करेंगी, जिससे वे अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे और जब वे अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे तो अपने कर्मभोग की वेदना, सम्बन्धों की कटुता, निर्धनता आदि होते भी उसकी महसूसता से ऊपर उठकर परमशान्ति, परमशक्ति, परमानन्द, परमसुख को अनुभव करेंगे क्योंकि हर आत्मा का आत्मिक स्वरूप सच्चिदानन्दमय है। इसीलिए कहा गया है - Events can't be changed, but we can change our attitude towards events.

व्यर्थ संकल्प से मुक्त हो, सदा समर्थ संकल्प की धारणा
व्यर्थ से मुक्त सदा समर्थ टेन्शन-फ्री स्थिति और उसके लिए पुरुषार्थ एवं धारणा
व्यर्थ संकल्पों से मुक्त और टेन्शन-फ्री जीवन का मूल मन्त्र

"संगमयुग की दो बातें जो विशेष अमूल्य हैं - एक संकल्प शक्ति और दूसरा संगम का समय।... अभी ये व्यर्थ संकल्प फिनिश होने चाहिए क्योंकि संगमयुग के महत्व के हिसाब से एक सेकेण्ड भी कई कीमती समय का अधिकार दिलाता है। ... बाप का वरदान सहज मिलेगा, लेकिन सिर्फ थोड़ा अटेन्शन रखना पड़ेगा। दृढ़ संकल्प करो कि आज से अटेन्शन, नो टेन्शन। बाप के वरदान की मदद का अनुभव करके देखना।" अ.बापदादा 31.04.11

"अटेन्शन, नो-टेन्शन। बापदादा हर बच्चे को मनजीत, जगतजीत बनाना चाहते हैं। जब भी देखो तो आपका चेहरा टेन्शन-फ्री, कमल पुष्प समान वा खिला हुआ गुलाब पुष्प मिसल दिखाई दे।... लेकिन अभी बापदादा सभी को टेन्शन-फ्री देखने चाहते हैं।... मन्सा द्वारा और अपने चेहरे और चलन द्वारा सर्विस करो। अभी का अभ्यास आगे आने वाले समय में कार्य में आयेगा।"

अ.बापदादा 31.04.11

"आज का संकल्प याद रखना 'सदा खुश", कभी-कभी वाला नहीं, सदा खुश। कोई भी देखे तो आपके चेहरे को देखकर सोचे कि यह बहुत भाग्यवान आत्मा दिखाई देती है। आपका भाग्य चलन और चेहरे से दिखाई दे। ऐसे नहीं कि सिर्फ मन में है कि मैं बहुत भाग्यवान हूँ। नहीं, आपका भाग्यवान चेहरा, खुशनुमा चेहरा

औरों को परिचय करायेगा। चेहरा बोलेगा कुछ है। आपका चेहरा सर्विस करे।"

अ.बापदादा 2.03.11

Q.व्यर्थ संकल्पों का मूल कारण क्या है और उनसे कैसे मुक्त हो सकते हैं?

विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की समझ और उसकी धारणा की कमी ही व्यर्थ संकल्पों का मूल कारण है। विश्व-नाटक के ज्ञान में आत्मा, परमात्मा का ज्ञान स्वत: आ जाता है। देहाभिमान व्यर्थ संकल्पों का मूल कारण है, जिसका निराकरण विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा और आत्मिक स्वरूप के सफल अभ्यास से ही सम्भव है, इसलिए ही ज्ञान सागर परमात्मा ने अभी संगमयुग पर यह ज्ञान दिया है।

व्यर्थ संकल्पों का कारण अज्ञानता है। अज्ञानता से देहाभिमान और देहाभिमान के कारण राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, अहंकार-हीनता का जन्म होता है, जो व्यर्थ संकल्पों का मूल कारण हैं। यथार्थ ज्ञान की धारणा से देही-अभिमानी स्थिति बनती है, जो समर्थ स्थिति है और चढ़ती कला का आधार है। इसके लिए बाबा तीन बिन्दुओं के स्मृति स्वरूप बनने के लिए कहा है। आत्मिक स्वरूप स्वत: में सर्वशक्तियों से सम्पन्न समर्थ है। परमात्मा बिन्दु अर्थात् परमात्मा सर्वशक्तिवान है, उनकी समृति मात्र से आत्मा समर्थ बन जाती है और ड्रामा बिन्दु अर्थात् ड्रामा के ज्ञान की यथार्थ धारणा होगी तो किसी तरह का व्यर्थ संकल्प आ ही नहीं सकता।

"आज बर्थ-डे पर बापदादा का यही संकल्प है कि यह व्यर्थ संकल्प रूपी अक का फूल अर्पण करो। व्यर्थ संकल्प न करना है, न सुनना है और न संग में आकर व्यर्थ संकल्पों के संग का रंग लगाना है। क्योंकि जहाँ व्यर्थ संकल्प होगा, वहाँ याद का संकल्प, ज्ञान के मधुर बोल, जिसको मुरली कहते हैं, वे शुद्ध संकल्प स्मृति में नहीं रहेंगे।... यह व्यर्थ संकल्प बाप को दृढ़ संकल्प से दे देना है।... बाप को एक बार अपनी रुचि से, दृढ़ता से दे दो और बार-बार चेक करो कि दी हुई चीज़ हमारे पास वापस तो नहीं आई।"

अ.बापदादा 2.03.11

"आपको बापदादा का डॉयरेक्शन है होली अर्थात् बीती सो बीती। ... आप सब

हो ली अर्थात् बीती सो बीती करते हो। ... क्योंकि बीती को याद करने से व्यर्थ संकल्प बहुत चलते हैं। समय भी व्यर्थ जाता है। इस संगमयुग का एक-एक मिनट, जो एक जन्म में 21 जन्मों की प्रॉलब्ध बनाता है, वह एक-एक संकल्प और एक-एक मिनट कितना वैल्युबुल है।"

अ.बापदादा 16.03.11

"बापदादा ने पहले भी कहा है कि संगम का समय और संकल्प व्यर्थ नहीं गंवाना है। अगर सदा परमात्म संग के रंग में रंगे हुए हो अर्थात् बाप को सदा का साथी बनाकर रहते हो तो संगमयुग के एक-एक संकल्प और समय का एक-एक मिनट सफल कर सकते हो। अपने को चेक करो - एक-एक मिनट, एक-एक संकल्प सफल होता है या व्यर्थ जाता है? क्योंकि एक-एक मिनट और एक-एक संकल्प का 21 जन्मों की प्रॉलब्ध से कनेक्शन है।... इस संगम के समय के लिए कहा हुआ है - "अब नहीं तो कब नहीं।"

अ.बापदादा 16.03.11

"बापदादा सदा ही इशारा देते हैं कि अपने मन के शुभ सतोगुणी संकल्प द्वारा प्रकृति को भी सतोगुणी बनाते रहो। तो यह मन्सा सेवा याद रहती है?... प्रकृति को मनुष्यात्मायें तंग करती हैं, तो वह भी तंग करना शुरू करती है। इसलिए बाप कहते हैं - जैसे मायाजीत बनने का अटेन्शन रखते हो,... ऐसे ही प्रकृतिजीत भी बनना है।"

अ.बापदादा 16.03.11

"जिसमें रुहानियत है, उनकी विशेषता यह है कि वे दूर रहते हुए भी आत्माओं को अपनी रुहानियत से आकर्षित कर सकते हैं। जैसे मन्सा शक्ति के आधार से प्रकृति का परिवर्तन वा कल्याण करते हो ना।... मन्सा शक्ति से जैसे प्रकृति को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हो, वैसे विश्व की अन्य आत्मायें जो आप लोगों के आगे नहीं आ सकेंगे, उनको... बाप का मुख्य सन्देश मन्सा द्वारा बुद्धि में टच कर सकते हो।"

अ.बापदादा 4.8.72

"सब आधार टूटने हैं, तो ऐसे समय पर क्या चाहिए - एक ही बाप का आधार।... लेकिन साधन और साधना दोनों का बैलेन्स। साधनों को देखते साधना को नहीं भूल जाना। क्योंकि आखिर में साधना ही काम में आनी है।"

Q.सदा खुशनुमा चलन और चेहरा कैसे रह सकता है?

जब आत्मा को संगमयुग की प्राप्तियों का ज्ञान होगा और उसकी अनुभूति होगी तो आत्मा सदा अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलती रहेगी। संगमयुग की प्राप्तियाँ सतयुग से भी अति महान हैं, जिसको उसकी अनुभूति होती है, वह सदा अतीन्द्रिय सुख में रहता है, जिससे उसका चेहरा और चलन सदा ही खुशनुमा रहती है।

चलन और चेहरा सदा खुशनुमा तब ही रह सकता है, जब मन में कोई व्यर्थ संकल्प नहीं होगा और व्यर्थ संकल्प न हो, उसके लिए तीन बिन्दुओं की प्रैक्टिकल जीवन में धारणा हो अर्थात् आत्मा को ड्रामा के ज्ञान की यथार्थ समझ हो और अपने मूल स्वरूप बिन्दु रूप में स्थित हो और बिन्दु स्वरूप बाप को याद करने का सफल अभ्यास हो। व्यर्थ संकल्प से व्यर्थ कर्म होना स्वभाविक है, जिस व्यर्थ कर्म से आत्मा पर बोझ चढ़ जाता है, जो आत्मा को चाहते हुए भी खुश रहने नहीं देता है। व्यर्थ संकल्प स्वत: में आत्मा के ऊपर एक बोझ है, जो आत्मा को खुश रहने नहीं देते। आत्मिक स्वरूप में स्थिति और बाबा की याद में व्यर्थ कर्म हो नहीं सकता।

Q.व्यर्थ संकल्प खत्म हो जाये, उसके लिए क्या पुरुषार्थ करना है?

व्यर्थ संकल्पों को खत्म करने के लिए व्यर्थ संकल्पों का कारण जानना अति आवश्यक है। व्यर्थ संकल्पों का मूल कारण अज्ञानतावश अपने लिए दूसरों को दोषी समझना है, शुभ का वियोग, अशुभ का संयोग अर्थात् जिसको चाहते हैं, उसका वियोग और जिसको नहीं चाहते हैं, उसका संयोग या उसकी आशंका व्यर्थ संकल्पों का कारण है। परमात्मा ने जो ज्ञान दिया है, उसमें इन दोनों बातों का कोई स्थान नहीं है अर्थात् यदि आत्मा परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान की यथार्थ रीति धारणा कर लेती है तो ये दोनों बातें मिट जायेंगी और आत्मा व्यर्थ संकल्पों से मुक्त हो जायेगी। व्यर्थ से मुक्त आत्मा सदा समर्थ स्थिति का अनुभव करेगी।

वर्तमान में जीना अर्थात् एक सेकण्ड पहले का चिन्तन और एक सेकण्ड के बाद की चिन्ता से मुक्त स्थिति। जिसका वर्तमान अच्छा है, जो अपने वर्तमान को सफल कर रहा है, उसका भविष्य निश्चित ही अच्छा होगा। इस सत्य को

जानकर इस स्थिति में रहने वाला ही जीवनमुक्त स्थिति के अनुभव में रहता है। गायन भी बीती को चितवो नहीं, आगे की धरो न आश अपने वर्तमान को सफल करो, उसका सुख अनुभव करो।

Q.क्या हमारे व्यर्थ संकल्प के लिए कोई अन्य आत्मा उत्तरदायी है अर्थात् कारण है?

वास्तव में हर आत्मा अपने सुख-दुख के लिए स्वयं ही उत्तरदायी है, इसलिए अपने लिए दूसरों को दोषी समझना आत्मा की बड़ी भूल है। दूसरी आत्मायें तो केवल निमित्त कारण ही बनती हैं, मूल कारण उसके अपने पिछले कर्म या वर्तमान का अलबेलापन है, जो उसको स्वयं ही दूर करना होगा।

Q.हमारे व्यर्थ संकल्प से हमारा क्या-क्या घाटा होता है?

व्यर्थ संकल्पों के कारण हमारा क्या-क्या नुकसान होता है, वह ज्ञान भी होना अति आवश्यक है। व्यर्थ संकल्प वाला सदा परेशान दिखाई देता है, उसको संगमयुग का सुख अनुभव नहीं होता है।

व्यर्थ संकल्पों से आत्मा का समय, स्वांस, संकल्प व्यर्थ जाता है, जो संगमयुग पर बहुत मूल्यवान है क्योंकि इनके द्वारा ही अर्थात् इनको ईश्वरीय सेवा में लगाकर हम अभी भविष्य के लिए कमाई जमा कर सकते हैं।

व्यर्थ संकल्प वाला कब मन्सा सेवा नहीं कर सकता है क्योंकि मन्सा व्यर्थ संकल्पों में बिजी रहती है और व्यर्थ संकल्पों के कारण कमजोर हो जाती है। व्यर्थ संकल्पों से अनेक प्रकार की मानसिक और शारीरिक व्याधियाँ भी हो जाती हैं। व्यर्थ संकल्प स्वत: में बड़ी व्याधि है, जो आत्मा को दुखी करती रहती है।

व्यर्थ संकल्पों से वातावरण प्रदूषित होता है, जिसके कारण आत्मा पर पापों का बोझ चढ़ता है, क्योंकि उससे अन्य आत्मायें और पंच तत्व भी प्रभावित होते हैं।

व्यर्थ संकल्प होगा तो मुरली का मनन-चिन्तन नहीं होगा और मनन-चिन्तन नहीं तो धारणा भी नहीं होगी और जब मुरली की धारणा नहीं होगी तो इस ईश्वरीय जीवन का सच्चा सुख अनुभव नहीं होगा, हमारे जीवन से ईश्वरीय जीवन की खुशी और नशा प्रत्यक्ष नहीं होगा, जिसके लिए बाबा हमारे से आश रखता है

और निरन्तर याद दिलाता रहता है।

व्यर्थ को समाप्त करने के लिए ज्ञान का मनन-चिन्तन करके इस विश्व-नाटक की यथार्थता को जानना और व्यर्थ संकल्प से मुक्त होने का दृढ़ता से संकल्प करना अति आवश्यक है। परमात्मा की मदद भी उसको ही मिलती है, जो सच्ची दिल से और दृढ़ता से पुरुषार्थ करता है।

अचानक के समय बिन्दु बनना है, बिन्दु रूप में सबको देखना है और व्यर्थ समय-संकल्प को बिन्दु लगाना है। इस स्थिति का अभ्यास अब बढ़ाना है और इसका वायुमण्डल फैलाना है। इसके लिए हर एक को अपने लिए कोई न कोई समय निकालने की विधि बनानी है अर्थात् यज्ञ सेवा करते, अपनी दिनचर्या प्रमाण अपना समय निश्चित करना है और आत्माओं को सुख-शान्ति की किरणें बाप द्वारा निमित्त बन पहुँचानी हैं। इससे स्व की सेवा भी ऑटोमेटिक हो जायेगी।

अव्यक्त सन्देश 13.03.11

"बापदादा ने कहा था कि संस्कार मिलन की रास कब करेंगे, उसकी डेट भी फिक्स करो। फिक्स हो सकती है?... चाहे मेरा संस्कार, चाहे दूसरे का संस्कार हो परन्तु मेरे को प्रभाव नहीं डाले।... हमको किसका संस्कार देखने के बजाये, सबके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रखनी है। आखिर भी ब्राह्मण परिवार है ना। ... मन्सा सेवा करने का टाइम निकालना है ना। अगर यह संस्कार की खिटखिट होगी तो वह उस समय अपनी तरफ खींच लेगी। इसलिए समय की अभी यह आवश्यकता है।"

अ.बापदादा 16.03.11

मन्सा सेवा में सफलता का मन्त्र है टेन्शन-फ्री, व्यर्थ संकल्पों से मुक्त विश्व-कल्याण की भावना से परिपूर्ण शक्तिशाली मन्सा स्थिति। उसके लिए विश्व-नाटक के ज्ञान का यथार्थ अनुभव और उसकी धारणा अति आवश्यक है।

"सर्विसएबुल का हर संकल्प, हर बोल, हर कर्म सर्विस करने योग्य होगा। उसका संकल्प भी ऑटोमेटिकली सर्विस करेगा क्योंकि उसका संकल्प सदा विश्व के कल्याण प्रति ही होता है अर्थात् उसको संकल्प भी विश्व कल्याणकारी का ही उत्पन्न होता है। कोई संकल्प व्यर्थ नहीं होगा। समय भी हर सेकण्ड मन्सा, वाचा, कर्मणा सर्विस में ही व्यतीत होगा।"

अ.बापदादा 4.8.72

"इस विजयीपन के निश्चय के आधार पर वा त्रिकालदर्शीपन के आधार पर जो भी कार्य करेंगे, वह कब व्यर्थ वा असफल नहीं होंगे।... कोई भी कार्य में असफलता होती वा व्यर्थ हो जाता है, इसका कारण ही यह है कि तीनों कालों को सामने रखते हुए कार्य नहीं करते।... सेन्सीबुल कभी समय, संकल्प वा बोल को व्यर्थ नहीं गँवायेंगे। सेन्सीबुल कभी भी व्यर्थ संग के रंग में नहीं आयेंगे, कभी भी कोई वातावारण के वश नहीं होंगे।" अ.बापदादा 4.08.72

Q.ईश्वरीय मन्सा शक्ति, पवित्र मन्सा शक्ति और शक्तिशाली मन्सा में कोई अन्तर है या तीनों एक ही हैं?

ईश्वरीय मन्सा शक्ति, पवित्र मन्सा शक्ति और शक्तिशाली मन्सा में बहुत बड़ा अन्तर है। पवित्र मन्सा वाला अपनी मन्सा शक्ति से सदा श्रेष्ठ कर्म ही करेगा, लेकिन शक्तिशाली मन्सा वाला अच्छे-बुरे दोनों प्रकार के कर्म कर सकता है। इसलिए बाबा ने अनेक बार कहा है कि राम और रावण दोनों सर्वशक्तिवान हैं, इसलिए दोनों का ही इस विश्व-नाटक में आधे-आधे समय तक राज्य चलता है। नेपोलियन, हिटलर, औरंगजेब आदि में भी मन्सा शक्ति तो थी लेकिन वह स्वार्थपरता और देहाभिमान से प्रेरित थी, इसलिए उनके द्वारा अनेक प्रकार के आसुरी कर्म, नर-संहार आदि हुए, परन्तु ब्रह्मा बाबा में जो मन्सा शक्ति थी, वह पवित्र मन्सा शक्ति थी, इसलिए ज्ञान से पहले भी उनके कार्य श्रेष्ठ थे और परमात्मा की प्रवेशता के बाद, उनकी श्रीमत पर उन्होंने अपनी मन्सा शक्ति को ईश्वरीय मन्सा शक्ति में परिवर्तन कर नये विश्व की संरचना का अलौकिक कार्य किया। धर्म-पिताओं में भी पवित्र मन्सा शक्ति तो होती है, परन्तु उनमें आत्मा, परमात्मा और विश्व-नाटक का यथार्थ नहीं होता है, उनका बुद्धियोग परमात्मा के साथ नहीं होता है, इसलिए उनकी मन्सा को ईश्वरीय मन्सा शक्ति नहीं कह सकते हैं। वे अपनी पवित्र मन्सा शक्ति से धर्म की स्थापना तो करते हैं लेकिन विश्व का नव-निर्माण नहीं कर सकते हैं। महात्मा गाँधी आदि में मन्सा शक्ति तो थी, परन्तु वह सामान्य स्तर की थी, इसलिए उन्होंने अपनी मन्सा शक्ति से देश और समाज में अनेक प्रकार के सुधार के कार्य किये, परन्तु विश्व का नव-निर्माण नहीं कर सके। अभी परमात्मा हमारी मन्सा शक्ति को ईश्वरीय मन्सा शक्ति में परिवर्तन

कर विश्व नव-निर्माण का कार्य हमारे द्वारा करा रहा है और स्वयं भी कर रहा है।

वर्तमान संगमयुग पर अलौकिक कर्तव्य करने और पवित्र मन्सा शक्ति को धारण करने के लिए ईश्वरीय मन्सा शक्ति की अति आवश्यकता है, जो सर्वशक्तिवान परमात्मा की मधुर याद और आत्मा, परमात्मा और विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की धारणा से ही आत्मा में आती है, इसलिए अभी परमात्मा ने यह ज्ञान दिया है और दे रहे हैं। ईश्वरीय मन्सा शक्ति से अलौकिक कर्तव्य करके आत्माओं ने परमात्मा के साथ नये विश्व का निर्माण किया और दैवी जीवन पाया। देवताओं में पवित्र मन्सा शक्ति होती है, ईश्वरीय मन्सा शक्ति नहीं क्योंकि उनको आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र का यथार्थ ज्ञान नहीं होता है, उनकी चढ़ती कला नहीं होती है, उतरती कला होती है। ईश्वरीय मन्सा शक्ति से आत्माओं और विश्व की चढ़ती कला होती है।

"बापदादा कोई भी कर्म के फल की इच्छा नहीं रखते।... यहाँ फल की प्राप्ति का संकल्प रहता है।... कमाया और खाया, उसमें विल-पावर नहीं रहती है। वे अन्दर से सदैव कमजोर रहेंगे, शक्तिशाली नहीं होंगे क्योंकि खाली-खाली हैं। भरी हुई चीज पॉवरफुल होती है।... जब यह बात कम हो जायेगी, तब निराकारी, निरहंकारी और साथ-साथ निर्विकारी- मन्सा-वाचा-कर्मणा में तीनों सब्जेक्ट दिखाई देंगे। शरीर में होते भी निराकारी, आत्मिक रूप दिखाई देगा। जैसे साकार में देखा।"

अ.बापदादा 28.07.72 पंजाब पार्टी

"यूँ तो आत्मा एक शरीर छोड़कर दूसरा लेती है। कहाँ की कहाँ चली जाती है। यहाँ से अमेरिका भी जा सकती है। कोई का कोई से सम्बन्ध होता तो झट शरीर छोड़कर उड़ेगी। एक सेकेण्ड में कहाँ भी जा सकती है। परन्तु उड़कर अपने घर वापस जाये, यह नहीं हो सकता। पतित आत्मा वहाँ जा नहीं सकती, इसलिए पुकारती है - हे पतित-पावन आओ।"

सा.बाबा 4.05.11 रिवा.

आत्मिक शक्ति सम्पन्न आत्मा खूँखार जानवरों और व्यक्तियों के बीच रहते भी सदा स्वतन्त्रता से निश्चिन्त रहती है। बाबा ने अनेक बार मुरलियों में कहा है कि जब सन्यासियों में आत्मिक बल था, तो वे जंगलों में निश्चिन्त रहते हुए

अपनी तपस्या करते थे। उनको जानवरों से भी कोई भय नहीं होता था।

जब आत्मिक शक्ति, ईश्वरीय शक्ति से प्रभावित होती है तो विश्व का नव-निर्माण होता है। केवल आत्मिक शक्ति आत्मिक शक्ति से आत्मा की और विश्व की उतरती कला होती है। जब आत्मिक शक्ति देहाभिमान से प्रभावित होती है तो आसुरी कर्म करती है, जिससे विश्व की और आत्मा की उतरती कला तीव्रता से होती है।

माला और माला में आने का राज

"जनक बच्ची ने कहा 108 की माला का और 16 हजार की माला का खास मिलन करो। तो आप जो समझते हैं कि हम 16 हजार या 108 की माला में आने वाले ही हैं, वे हाथ उठाओ। नये-नये भी उठा रहे हैं। मुबारक हो। निश्चयबुद्धि विजयी होते हैं। बापदादा भी जानते हैं कि जो निश्चयबुद्धि हैं, वे आगे जा सकते हैं और जायेंगे ही।... सदा अमृतवेले निश्चय को रिवाइज़ करते रहना।"

अ.बापदादा 31.12.10

"सिर्फ वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझाने से माला का दाना नहीं बन सकते हैं। माला का दाना बनेंगे बाप की याद से।... आत्मा, परमात्मा का राज़ नहीं जानते, यथार्थ रीति याद ही नहीं करते हैं, इसलिए अवस्था डगमगाती रहती है क्योंकि देहाभिमान बहुत है। देही-अभिमानी बनें, तब माला का दाना बन सकें। ऐसे नहीं कि वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझाते हैं, इसलिए माला में नजदीक आ जायेंगे।"

सा.बाबा 20.04.11 रिवा.

अव्यक्त बापदादा ने इन महावाक्यों में आठ, 108, 16108 की माला में आने का राज़ स्पष्ट किया है। बाबा के इस राज़ को समझकर जिन्होंने इसका जितना पुरुषार्थ किया होगा या कर रहे हैं, वे उस माला में आने का अधिकार प्राप्त करेंगे। वे अभी भी संगमयुग का परमसुख अनुभव करेंगे और भविष्य में राजपद के अधिकारी बनकर भी सतोप्रधान प्रकृति का सुख अनुभव करेंगे। इस सबकी अनुभूति अधिकारी आत्मा को अन्त तक अवश्य होगी। जिसके लिए बाबा ने कहा है - आठ वालों को धर्मराज़पुरी में रुकने की भी आवश्यकता नहीं होगी,

108 को कुछ रुकना होगा। और तो सब नम्बरवार पास करेंगे।
"सारे दिन में हर घण्टे एक सेकण्ड में बिन्दु लगाने के अभ्यास में कितने सफल रहे, उसका चार्ट देते रहेंगे? इस रिपोर्ट से पता पड़ेगा कि आप 108 या 16000 की माला में आने के अधिकारी है।" अ.बापदादा 31.12.10

"(स्थिति के आधार पर) अब यथार्थ माला के मणके नम्बरवार प्रख्यात होने वाले हैं। माला कोई हाथ से नहीं पिरोनी है। चलन से स्वयं ही अपना नम्बर ले लेते हैं। ... दोनों (रिफाइन अर्थात् निर्विघ्न और फाइन अर्थात् दण्ड) को देखते हुए साक्षी होकर हर्षित रहना है। खेल भी वही अच्छा लगता है, जिसमें कोई बात की अति होती है। वह सीन अति आकर्षण करने वाली होती है।" अ.बापदादा 12.06.72
"एवर-रेडी रहने का अभ्यास और मायाजीत-मनजीत, जगतजीत का संस्कार बहुत समय से बनायेंगे, तब अन्त समय भी यह बहुत काल का अभ्यास विजयी बनाकर आपको विशेष माला का मणका बनायेगा और आप पास विद् ऑनर बनेंगे। पास नहीं, पास विद् ऑनर।... बापदादा रोज़ अमृतवेले अपने माला के मणको को देखते और विशेष मिलन मनाते हैं।"

अ.बापदादा 17.2.11

"बापदादा ने जो पहले काम दिया था (संस्कार मिलन की रास का) परसेन्टेज लिखने का। ... अटेन्शन दिया, उसकी बापदादा मुबारक दे रहे हैं। लेकिन अभी बापदादा सभी को टेन्शन-फ्री देखने चाहते हैं। ... मन्सा द्वारा और अपने चेहरे और चलन द्वारा सर्विस करो। अभी का अभ्यास आगे आने वाले समय में कार्य में आयेगा।" अ.बापदादा 31.04.11
"मणका वा मोती की वैल्यू माला में पिरोने से होती है, अलग होने से कम हो जाती है, कारण? संगठन में होने के कारण वह मोती वा मणका शक्तिशाली हो जाता है। ... कहा जाता है 1 और 1 ग्यारह होते हैं। इतनी उनकी वैल्यू बढ़ जाती है।... सभी एक-दो से कहाँ तक सन्तुष्ट हैं वा एक-दो के समीप कितने हैं, इसका सर्टीफिकेट लेना होता है। (संगठन में ही सन्तुष्टता की परीक्षा होती है)"

अ.बापदादा 19.07.72

"यदि 5 प्रतिशत से ज्यादा कमी रही हुई तो समझना चाहिए कि फाइनल स्टेज से दूर हैं। फिर तो बापदादा के समीप और साथ रहने का जो लक्ष्य रखते हो, वह पूर्ण नहीं हो पायेगा। क्योंकि जब फर्स्ट नम्बर अव्यक्त स्थिति को पा चुके हैं तो उसके बाद जो समीप के रत्न होंगे, वे कम से कम इतने तो समीप हों।... क्या 50 प्रतिशत वाले आठ नम्बर में आ सकते हैं?"

अ.बापदादा 4.8.72

Q.संस्कार मिलन और संस्कार परिवर्तन का क्या विधि-विधान है?

Q.संस्कार मिलन की रास और मन्सा सेवा के लिए मूल धारणा क्या है और क्यों है?

हमको तीन प्रकार का संस्कार मिलन करना है। पहला - हमको घर वापस जाना है तो परमपिता परमात्मा के समान संस्कार धारण करने हैं। दूसरा - ब्रह्मा बाप के संस्कारों से अपने संस्कारों को मिलाना है अर्थात् उनके समान पुरुषार्थ कर उनके समान स्वभाव-संस्कार बनाने हैं और उनके समान फरिश्ता रूप बनकर सेवा करनी है। तीसरा - जिन आत्माओं के साथ सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हैं, उनके साथ संस्कारों को मिलाना है, जिससे संस्कारों की कोई टक्कर आदि न हो। आत्माओं के साथ संस्कारों के आधार पर ही जन्म-पुनर्जन्म लेकर आत्मायें विभिन्न पार्ट बजाती हैं। देहाभिमान के संस्कारों को परिवर्तन कर देही-अभिमानीपन के संस्कार अर्थात् आसुरी संस्कारों को परिवर्तन कर दैवी संस्कार धारण करना है।

दैवी परिवार के साथ संस्कार मिलन के आधार पर ही माला का दाना बनते हैं और दैवी परिवार के साथ भी संस्कार मिलन तब होगा, जब निराकार और साकार बाप के संस्कारों से मिलन होगा क्योंकि ये ही संस्कार मिलन और परिवर्तन के आधार हैं।

आत्मिक प्यार और विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की समझ और उसकी धारणा ही संस्कार मिलन का मूलाधार है। आत्मिक स्वरूप में स्थित होने से मन्सा शक्ति बढ़ेगी और आत्माओं के प्रति प्रेम जाग्रत होगा, जो मन्सा सेवा का मूलाधार है। विश्व-नाटक की यथार्थता पर विचार करें तो हर आत्मा निर्दोष अनुभव होगी

क्योंकि हर आत्मा विश्व-नाटक में अपना पूर्व-निश्चित पार्ट बजा रही है। जब यह निर्दोष दृष्टि होगी और आत्मिक प्यार होगा, तब ही संस्कार मिलन की रास होगी और आत्मा माला में आयेगी। माला एक की नहीं होती, माला संगठन का प्रतीक है और संगठन का आधार संस्कारों की समानता है।

सेकण्ड में बिन्दु रूप अर्थात् स्व-स्थिति में स्थित होने के अभ्यास का महत्व

सेकण्ड में बिन्दुरूप में स्थित होने के सफल अभ्यास से ही माला में आने का निर्णय होगा अर्थात् यह सेकण्ड में बिन्दु रूप में स्थित होने का सफल अभ्यास ही ब्राह्मण जीवन की सफलता का आधार है और माला में आने का निर्णय करेगा। वास्तव में हम आत्मिक स्वरूप है ही बिन्दुरूप तो उसमें स्थित होने का कोई पुरुषार्थ करने की आवश्यकता भी नहीं होनी चाहिए, परन्तु आत्मिक स्वरूप को भूल, देहाभिमान में आधा कल्प रहने के कारण देहाभिमान की जो आदत पड़ी हुई है, उसको भूलने का पुरुषार्थ करना होता है। यथार्थता को विचार करें तो बिन्दुरूप तो सारे कल्प ही भूला हुआ रहता है। आधा कल्प देहभान होता है और फिर आधा कल्प देहाभिमान हो जाता है। बिन्दुरूप का ज्ञान और उसमें स्थित होने से परम शक्ति और परमशान्ति की अनुभूति अभी संगम पर ही होती है।

बिन्दुरूप के सफल अभ्यास के लिए देह और देह की दुनिया की नश्वरता को समझना और दृढ़ निश्चय करके उससे बुद्धियोग निकालना अति आवश्यक है। साथ ही बिन्दुरूप के सतत अभ्यास वाले पुरुषार्थी को ही यह देह और देह की दुनिया भूलती है। दोनों बातें चक्रवत् काम करती हैं।

"अभी बापदादा चाहे नये हैं, चाहे पुराने हैं, सभी को एक सेकेण्ड का कार्य देते हैं। सभी अभी-अभी एक सेकेण्ड में अपने आपको और सभी संकल्पों से दूर कर अपने आपको अपने बिन्दु रूप में स्थित कर सकते हो। करेंगे? एक सेकेण्ड में मैं बिन्दु हूँ, और कोई संकल्प नहीं। जिसने सेकेण्ड में अपने को बिन्दु स्थिति में स्थित किया, वे हाथ उठाओ।... जितना आगे जायेंगे, उतना यह एक सेकेण्ड में बिन्दु स्थिति में स्थित होने की आवश्यकता पड़ेगी।"

अ.बापदादा 31.12.10

"बापदादा पूछते हैं - सदा सेकेण्ड में जो रूप अनुभव करना चाहो, वह कर सकते हो? सेकेण्ड में? 5 स्वरूप जो सुनाये थे, वह भी जब चाहो तो सेकण्ड में वह स्वरूप बन सकते हो?... अभ्यास करते-करते यह ऐसा नेचुरल हो जायेगा, जैसे अभी द्वापर-कलियुग के अभ्यास में देहाभिमान में आना नेचुरल हो गया है।... ऐसा समय आने वाला है, जिसमें आपको इस अभ्यास की बहुत आवश्यकता पड़ेगी। ... यह अभ्यास अपने कार्य में रहते भी करते रहो।"

अ.बापदादा 31.12.10

"सेकण्ड में बिन्दु रूप में स्थित होने का अभ्यास आपेही करो, अपना आप ही टीचर बनो लेकिन रिजल्ट दिखाने के लिए अपना चार्ट देते रहेंगे तो अटेन्शन जायेगा। ... मन को जिस स्थिति में रहाने चाहो, उस स्थिति में रहे। महामन्त्र भी यादगार में मन्मनाभव है। मन की इस ड्रिल में कितनी सफलता है, वह अपना आप ही अनुभव करो।"

अ.बापदादा 31.12.10

"आज बापदादा बच्चों को मन की एक्सरसाइज़ सिखाते हैं क्योंकि मन बच्चों को कभी-कभी अपने तरफ खींच लेता है। तो आज बापदादा मन को एकरस बनाने की एक्सरसाइज़ सिखा रहा है। ... ऐसे पाँचो ही रूप सामने लाओ और उस रूप का अनुभव करो। हर घण्टे 5 सेकेण्ड इस ड्रिल में लगाओ। ... मुश्किल नहीं लगेगा, सहज लगेगा क्योंकि यह एक्सरसाइज़ आपने अनेक बार की हुई है। हर कल्प की है।... एक-एक रूप के सामने आते ही हर रूप की विशेषता का अनुभव होगा।... तो हर घण्टे 5 मिनट यह एक्सरसाइज करो तो कार्य करते भी यह नशा रहेगा।"

अ.बापदादा 30.11.10

"स्व-स्थिति अर्थात् अनादि स्थिति में सदा स्थित रहें, उसके लिए मुख्य चार बातें आवश्यक हैं। अगर चारो ही बातें सदा कायम हैं तो स्व-स्थिति सदा रहती है।... वैसे भी देखो तो सदा सुख वा शान्तिमय जीवन तब बन सकती है, जब जीवन में चार बातें अर्थात् हेल्थ, वेल्थ, हैपी, और होली हों। ऐसे ही स्व-स्थिति का स्वरूप भी है सदा सुख-शान्ति-आनन्द-प्रेम स्वरूप में स्थित रहना।"

अ.बापदादा 14.6.72

"बापदादा ने इशारा दे दिया है कि कुछ भी आपदा अचानक आनी है, इसके लिए सेकेण्ड में फुल स्टॉप। उस समय पुरुषार्थ का समय नहीं होगा कि अभ्यास करें। ... इसलिए पुरुषार्थ का समय अभी मिला हुआ है। उस समय प्रैक्टिकल करने का समय होगा। अभी यह अभ्यास कर भी रहे हो,... लेकिन बापदादा और भी अटेन्शन को अण्डरलाइन करा रहे हैं।" अ.बापदादा 2.02.11

"अभी एक बात करना, जो अपने मन को बिज़ी रखने के लिए आवश्यक है। जैसे पहले भी बाप ने कहा था कि सेकेण्ड में स्टॉप, बिन्दू हूँ, बिन्दू लगाना है और सबको बिन्दू रूप में देखना है। जब देखेंगे ही बिन्दु तो और कोई भी संकल्प चलेगा ही नहीं।" अ.बापदादा 17.02.11

"तीव्र पुरुषार्थी बन सेकेण्ड में बिन्दु लगाने, फुलस्टॉप लगाने का अभ्यास अति आवश्यक है। इस बात को हल्का नहीं करो। अचानक कुछ न कुछ होना ही है।" अ.बापदादा 31.04.11

बिन्दुरूप के सफल अभ्यास से ही हम अमरत्व को प्राप्त करते हैं। इस अभ्यास से सहज देह से न्यारे होने और देह में रहते अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करते हैं। यही अभ्यास आत्मा को सतयुग-त्रेता में समय पर सहज देह को त्याग करने की शक्ति प्रदान करता है और अभी संगम पर भी मृत्यु-भय और मृत्यु-दुख से मुक्त करता है। बिन्दु स्वरूप परम शान्त, परम शक्ति सम्पन्न, आनन्दमय स्वरूप की स्थिति है, जो आत्मा उस स्वरूप में स्थित होती है, वह परम-शान्ति, परम-शक्ति, परम-आनन्द की अनुभूति अवश्य करती है। बिन्दुरूप में स्थित आत्मा साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को खेल के समान देखते हुए परम-सुख का अनुभव करती है।

Q.ब्रह्मा बाप ने जीवनमुक्त स्थिति बनाने के लिए मुख्य पुरुषार्थ क्या किया, जिसके आधार से उन्होंने सदा जीवनमुक्त स्थिति का सुख अनुभव किया और हम भी उस पुरुषार्थ को फॉलो करें तो हम भी जीवनमुक्त स्थिति का सुख अनुभव कर सकते हैं, जो बाबा हमारे से चाहता है?

वास्तविकता पर विचार करें तो ब्रह्मा बाबा ने देह से न्यारे अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का जो सफल अभ्यास किया, वही उनके जीवनमुक्त बनने का

आधार है। जो दृढ़ता से इस अभ्यास को करेगा और इस अभ्यास में जितना सफल होगा, वह उतना ही ब्रह्मा बाप के समान जीवनमुक्त स्थिति का परम सुख इस जीवन में अनुभव करेगा। संगमयुग की जीवनमुक्त स्थिति ही यथार्थ जीवन-मुक्त स्थिति है।

"बापदादा चाहता है कि बच्चे सदा ठीक और सदा योगी बनें। इसलिए बापदादा ने बच्चों को काम भी दिया था कि सदा योगी रहने के लिए हर घण्टे अपने ऊपर कोई न कोई अ.बापदादा 18.01.11

Q.बिन्दुरूप में स्थित होने के अभ्यास में मन-बुद्धि को कहाँ और किस रूप में स्थित करें अर्थात् भृकुटी में या परमधाम में?

यथार्थता को विचार करें तो परमधाम में आत्मा बिन्दु रूप होते भी आत्मा को बिन्दुरूप स्थिति की कोई अनुभूति नहीं होती है क्योंकि वहाँ शरीर ही नहीं है और कोई संकल्प भी नहीं होता है, इसलिए किसी प्रकार की अनुभूति का प्रश्न ही नहीं उठता है। परमधाम में आत्मा से कोई वृत्ति या वायब्रेशन भी प्रवाहित नहीं होता है। परन्तु देह में रहते देह से न्यारी बिन्दुरूप स्थिति में मन-बुद्धि को स्थित करने से आत्मा को सूक्ष्म संकल्प रहता है जिससे आत्मा को अपने स्वभाविक गुण शान्ति और शक्ति की अनुभूति करती है क्योंकि आत्मिक स्वरूप परमशान्त, परम-शक्ति सम्पन्न है। उस अनुभूति में आत्मा से शक्ति-शान्ति, प्रेम-आनन्द आदि के वायब्रेशन स्वत: प्रवाहित होते हैं, जो जड़-जंगम-चेतन सबको प्रभावित करते हैं। उस समय इस अनुभूति के अतिरिक्त आत्मा को कोई संकल्प नहीं चलता है, इसलिए इसको निर्संकल्प अवस्था कहा जाता है। उस समय आत्मा से जो वृत्ति और वायब्रेशन प्रवाहित होता है, वह अबाध रूप से सारे विश्व में जाता है। इस स्थिति को ही बाबा ने लाइट-हाउस, माइट-हाउस स्थिति कहा है। संक्षेप में कहें तो देह में रहते अपने आत्मिक स्वरूप अर्थात् बिन्दुरूप में स्थित होने का अभ्यास ही यथार्थ है। परमधाम में बिन्दुरूप की परिकल्पना ही होगी क्योंकि वहाँ आत्मा जा तो नहीं सकती है।

हठयोग में भी आत्मा का यथार्थ ज्ञान न होते हुए भी भृकुटी में ज्योति समझ बुद्धि को एकाग्र कर निर्संकल्पता का अभ्यास करते हैं और उस एकाग्रता

के अभ्यास में अल्पकाल के लिए सफलता प्राप्त करते हैं, तो उनको अल्पकाल के लिए परम-शान्ति अर्थात् मुक्ति की अनुभूति भी होती है। उसको ही निर्संकल्प समाधि कहते हैं और समझते हैं कि निर्संकल्प समाधि के बाद निर्विकल्प समाधि सिद्ध होगी। निर्संकल्प और निर्विकल्प समाधि के सिद्ध होने पर ही आत्मा को मुक्ति-जीवनमुक्ति का सुखद अनुभव होगा। जो दृढ़ता से अभ्यास करते हैं, उनको उसमें अल्पकाल के लिए सफलता अवश्य मिलती है क्योंकि आत्मा में इस अनुभूति के संस्कार नीहित हैं। अभी तो बाबा ने ज्ञान दिया है, जिस ज्ञान से हम अपने संकल्पों को समेट कर अपने मूल स्वरूप बिन्दु रूप में स्थित होते हैं, जिससे हमको सदा काल अर्थात् दीर्घ काल के लिए मुक्ति-जीवनमुक्ति की अनुभूति होती है। परमधाम में मुक्ति और सतयुग में जीवनमुक्ति होगी परन्तु परमधाम में अनुभूति की बात नहीं होती क्योंकि वहाँ देह नहीं, इसलिए संकल्प नहीं है और सतयुग में जीवनमुक्त होते भी जीवनमुक्ति के अनुभूति की बात नहीं क्योंकि जीवनमुक्ति और जीवनबन्ध का ज्ञान नहीं होता है। यथार्थ रूप में अनुभूति इस समय इस देह में रहते हुए ही होती है।

परमधाम में बिन्दुरूप की स्मृति ही हो सकती है, स्थिति नहीं क्योंकि परमधाम में आत्मा जा तो नहीं सकती है, लेकिन भृकुटी में आत्मा विराजमान है, इसलिए भृकुटी में ज्योतिबिन्दु रूप में मन-बुद्धि को स्थित करने से ही आत्मा को आत्मिक गुणों और शक्तियों की अनुभूति होगी। आत्मिक स्वरूप सत्-चित्-आनन्द स्वरूप है तो आत्मा को उसका अनुभव होगा।

* इस निर्संकल्प आत्मिक स्वरूप के अभ्यास की सफलता और सदा काल स्थित रहने के लिए ही बाबा ने समय-समय पर कभी चार धामों की यात्रा का; कभी निराकारी, आकारी, साकारी स्थिति में स्थित होने का; कभी बिन्दुरूप, फिर प्रकाशमय फरिश्ता रूप, फिर ब्राह्मण स्वरूप का; कभी पाँच स्वरूपों अर्थात् निराकारी बिन्दुरूप, साकार देवता रुप, पूज्य रूप, ब्राह्मण रूप, फरिश्ता रूप आदि-आदि विभिन्न रूपों का बार-बार एक सेकेण्ड के लिए ऐसा अभ्यास करने के लिए कहा है, जिससे हमारा देहाभिमान मिट जाये और हम अपने आत्मिक स्वरूप में सदा काल स्थित होकर परमशान्ति, परमशक्ति, परमानन्द, परम सुख

का अनुभव करें क्योंकि आत्मिक स्वरूप परम शान्त, परम शक्ति सम्पन्न, परमानन्दमय है और ये विश्व-नाटक परम सुखमय है। जो इसको यथार्थ रीति जानकर पार्ट बजाता है, वह इसके परम सुख को अनुभव करता है। ब्रह्मा बाबा ने इसी के सफल अभ्यास द्वारा सम्पूर्णता और सम्पन्नता को प्राप्त किया और साकार में रहते हुए ही जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव किया।

यज्ञ स्थापना के आदि काल में भल इतना स्पष्ट ज्ञान नहीं था, परन्तु परमात्मा की शक्ति थी और आने वाली आत्माओं में जिसने बाबा पर निश्चयबुद्धि होकर इस निर्संकल्प अवस्था का जितना सफल अभ्यास किया, वे उतने ही इस यज्ञ में सफल हुए हैं, उन्होंने ही संगमयुग के परमानन्द का अनुभव किया है, वे संगमयुग पर भी ऊंच पद पाने के अधिकारी बनें हैं और भविष्य में भी राज्य अधिकारी बनेंगे। भविष्य अर्थात् सतयुग तो संगमयुग का प्रतिबिम्ब मात्र है अर्थात् जो यहाँ गुण-धर्म-संस्कार बनाते हैं, उस अनुसार वहाँ पद पाते हैं। आत्मा अपने मूलस्वरूप अर्थात् बिन्दुरूप में तो निर्संकल्प ही है, संकल्प तो जब पार्ट बजाने के लिए देह में प्रवेश करते हैं, तब उठता है। अभी हमको वापस घर जाना है तो बिन्दुरूप में ही जाना है, इसलिए यह अभ्यास परमावश्यक है।

अन्त समय और अभी भी कर्मभोग के समय कर्मभोग की वेदना से मुक्त होने के लिए भी ये बिन्दुरूप अर्थात् देह से न्यारी निर्संकल्प अवस्था का अभ्यास अति आवश्यक है।

"तुम बच्चों ने स्वर्ग का साक्षात्कार किया, तो विनाश का भी किया। बाबा को भी साक्षात्कार हुआ, तब तो सब छोड़ा, परन्तु उस समय इतना ज्ञान नहीं था, जितना अभी है। रात-दिन का फर्क है उस समय के ज्ञान और अभी के ज्ञान में।... पहले तो पाई-पैसे का ज्ञान था। अभी समझते हैं वह तो राँग था। बाप कहते हैं - आज तुमको बहुत गुह्य-गुह्य बातें सुनाता हूँ।" सा.बाबा 30.12.10 रिवा.

इस अभ्यास के महत्व और आवश्यकता को समझते हुए अव्यक्त बापदादा पिछले अनेक वर्षों से मुरली के मध्य में या अन्त में ये एक सेकण्ड में अपने बिन्दुरूप में स्थित होने की ड्रिल कराते आये हैं और अभी भी करा रहे हैं। बाबा ने यह भी कहा है अन्तिम विजय इस स्थिति के अभ्यास के आधार पर ही होगी।

बिन्दुरूप अर्थात् स्व-स्थिति और उसके अभ्यास में सहज सफलता का पुरुषार्थ

मूल रूप में इस विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान का अनुभव, निश्चय और धारणा बिन्दुरूप के अभ्यास में सहज सफलता प्राप्त करने का आधार है। इस अभ्यास के लिए दो बातें अति आवश्यक हैं। एक परमात्मा पर अटूट निश्चय और दूसरा विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान की समझ, अनुभव और धारणा। जिसका परमात्मा पर अटूट निश्चय होता है, वह सहज इस अभ्यास में सफल होता है और समय पर आवश्यकता अनुसार ज्ञान उसकी बुद्धि में सहज इमर्ज हो जाता है। यह विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण, कल्याणकारी है, जो हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है और सम्पूर्ण-सम्पन्न आत्मा को समय पर कृत्य का संकल्प स्वत: उठता है, उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वभाविक होती है इसलिए पहले से संकल्प करने की आवश्यकता ही नहीं है। जो विश्व-नाटक के अटल सिद्धान्तों को समझ लेता है, अनुभव करता है, उन पर निश्चय होता है, उनका धारणा स्वरूप होता है, वह सहज ही इस बिन्दूरूप के अभ्यास में सफल होता है।

जो इस विश्व-नाटक के यथार्थ ज्ञान को समझ लेता है, उसकी धारणा कर लेता है, वह सहज ही इस स्थिति में स्थित हो सकता है क्योंकि इस विश्व-नाटक में संकल्प करने की भी मार्जिन नहीं है। शिवबाबा ने अनेक बार कहा है - मैं कोई संकल्प या विचार नहीं करता हूँ, समय पर ज्ञान मुख से स्वत: निकलता है। ऐसे ही हर आत्मा में भी जो पार्ट है, उस अनुसार समय पर उसको संकल्प स्वत: आता है और वह उस पार्ट को बजाये बिना रह नहीं सकता है। परन्तु विडम्बना यह है कि परमात्मा में विश्व-नाटक का ज्ञान सदा इमर्ज है, परन्तु आत्माओं में पूरा तो किसी भी देहधारी की बुद्धि में इमर्ज नहीं रहता है। सबकी बुद्धि में नम्बरवार ही रहता है। यदि पूरा धारण हो, इमर्ज रूप में रहे तो आत्मा की कर्मातीत अवस्था हो जाये और उसको इस देह का त्याग करना पड़े। परन्तु यह सोचकर हमको अलबेला नहीं बनना है। यदि अलबेले बनें तो इस संगमयुग के परम-सुख को अनुभव नहीं कर सकेंगे।

देह में रहते देह से न्यारी स्थिति में परमशान्ति, परमशक्ति सम्पन्न परमानन्द

अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति की अनुभूति होती है, जिससे देह और देह की दुनिया स्वत: भूल जाती है और जब देह और देह की दुनिया भूलेंगे तब ही इस निर्संकल्प स्थिति में स्थित होंगे और आत्मा को ये अनुभूति होगी।

इस प्रकार हमको इस अभ्यास के लिए इन दोनों बातों अर्थात् परमात्मा पर अटूट निश्चय और विश्व-नाटक के ज्ञान और उसके विधि-विधानों की धारणा पर विचार करना होगा और उसके अनुसार पुरुषार्थ करेंगे तो सहज सफलता होगी।

"किसी कर्म में बहुत बिज़ी हो, लेकिन डॉयरेक्शन मिले - फुल स्टॉप, तो फुल स्टॉप लगा सकते हो या कर्म के संकल्प चलते रहेंगे। ... यह प्रैक्टिस कर्म करते बीच-बीच में एक सेकेण्ड के लिए भी करते रहो क्योंकि अन्तिम सर्टीफिकेट इस एक सेकण्ड के फुल स्टॉप लगाने पर ही मिलना है। सेकण्ड में विस्तार को समाकर सार स्वरूप बन जायें।... संकल्प किया और हुआ। ब्रेक इतनी पॉवरफुल हो। यह अभ्यास स्वयं ही करो।" अ.बापदादा 7.3.95

"संकल्प किया और स्वरूप बन जायें। ब्रेक इतनी पॉवरफुल हो। यह अभ्यास स्वयं ही करो। ... यह अभ्यास बहुत काल का चाहिए। समझो उस समय कर लेंगे, तो नहीं होगा। बहुत काल का अभ्यास ही काम आयेगा। बहुत काल का अभ्यास बहुत काल का राज्य-भाग्य प्राप्त करायेगा। दोनों का कनेक्शन है।... न्यारे और प्यारे होकर कर्म के सम्बन्ध में हो तो सेकण्ड में फुल स्टॉप लगेगा।"

अ.बापदादा 7.3.95

Q.सेकण्ड में फुल स्टॉप लगाने का भाव-अर्थ क्या है?

हम सदा ही अपने आत्मिक स्वरूप में रहें, सदा ये धारणा रहे कि हम आत्मा हैं, इन कर्मेन्द्रियों से कर्म कर रही हूँ। यह स्थिति निरन्तर रहे।

Q.स्थिति और स्मृति में क्या अन्तर है?

बिन्दुरूप स्थिति के सफल अभ्यास और उसके यथार्थ लाभ को अनुभव करने के लिए स्थिति और स्मृति का राज़ समझना भी अति आवश्यक है। वास्तविकता को देखा जाये तो स्मृति स्टार्टिंग प्वाइन्ट है और स्थिति फिनिशिंग प्वाइन्ट है। स्थिति में स्थित होने से आत्मा को आत्मिक गुणों और शक्तियों की अनुभूति होती है, स्मृति

में उस अनुभूति को करने का पुरुषार्थ करते हैं। आत्मा सच्चिदानन्द स्वरूप है। जो आत्मा अपने मूल स्वरूप बिन्दु रूप में स्थित होती है, उसको सत्-चित्-आनन्द का अनुभव अवश्य होता है। हठयोग में इन दोनों स्थितियों को ध्यान और समाधि के रूप में जाना जाता है। ध्यान अर्थात् स्मृति और समाधि अर्थात् स्थिति।

गीता का भगवान कौन और परमात्मा सर्वव्यापी नहीं

जब यह सिद्ध होगा कि गीता का भगवान श्रीकृष्ण नहीं, निराकार परम पिता परमात्मा शिव है और परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है, वह तो परमधाम का रहने वाला है। वही संगमयुग पर आकर गीता का ज्ञान ब्रह्मा मुख द्वारा देते हैं, जो अभी दे रहे हैं। तब ही इस ज्ञान यज्ञ की सम्पन्नता होगी और विश्व परिवर्तन होगा।

"ऐसे जूरिस्ट विंग वाले ऐसा ग्रुप बनाये, जो सिद्ध करे कि गीता का भगवान कौन है? क्योंकि अब यह दो बातें दुनिया में प्रसिद्ध होनी चाहिए, एक गीता का भगवान और दूसरा परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है।... ऐसे यह दो बातें अथॉरिटी वालों के पास प्रसिद्ध हो जायें।... ये दो बातें विशेष हैं, इनसे यह सिद्ध हो सकता है कि इनको यह सिखाने वाला कौन!... कोई अथॉरिटी है, जो इनको सिखाने वाला है।"

अ.बापदादा 31.12.10 जूरिस्ट विंग

"परमात्मा में सारा ज्ञान है, वह बड़ा है या छोटा है, वह सिद्ध कैसे करें? यह समझाया जाता है - वह ज्ञान का सागर है, जो ज्ञान फिर आत्माओं को देते हैं। ... टीचर में जो नॉलेज है, वह स्टूडेण्ट को देते हैं। जब इम्तहान पूरा होता है, फिर ट्रान्सफर हो दूसरे क्लास में जाते हैं, तब समझा जाता है कि इनमें यह नॉलेज है। (स्टूडेण्ट्स से टीचर की प्रत्यक्षता होती है) टीचर की सारी नॉलेज स्टूडेण्ट ने हप कर ली है।"

सा.बाबा 30.12.10 रिवा.

Q.परमपिता परमात्मा शिव ही भगवान है, वही गीता ज्ञान का दाता है, यह कैसे सिद्ध हो सकता है?

परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान की यथार्थ धारणा से ही सिद्ध कर सकते हैं कि इस ज्ञान का दाता निराकार परमात्मा शिव है, वही भगवान है और जब यह सिद्ध हो गया तो वही गीता का भगवान है, यह स्वत: सिद्ध हो जायेगा।

"समझा जाता है टीचर की सारी नॉलेज स्टूडेण्ट ने हप कर ली है। वैसे बाप रचयिता में भी रचना के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज है।... वह सब नॉलेज छोटी सी आत्मा भी ग्रहण कर लेती है।... ग्रहण करने वाला और कराने वाला दोनों का रूप-रंग, साइज़ एक समान ही है।(स्टूडेण्ट्स के पास होने से टीचर का शो होता है, जब हमारे जीवन में गीता ज्ञान की यथार्थ धारणा होगी, तब ही गीता ज्ञान-दाता सिद्ध होगा) "

सा.बाबा 30.12.10 रिवा.

मधुबन भूमि और मधुबन निवासी

मधुबन की भूमि, वातावरण और महिमा पर विचार करते हैं तो सहज ही तुलसी-दास की एक चौपाई याद आ जाती है - धन्य भूमि वन पंथ पहारा, जहाँ-जहाँ नाथ पाँव तुम धारा।

"ज्ञान सरोवर, पाण्डव भवन, शान्तिवन के जो भी मधुबन निवासी हैं, उनको भी बापदादा खास यादप्यार दे रहे हैं।... यहाँ के वायुमण्डल का सुख लेने के लिए बाहर से आकर अनुभव करते हैं तो यहाँ के रहने वाले, ऐसे वायुमण्डल में रहने वाले कितने भाग्यवान हैं। बापदादा यही चाहते हैं कि हर एक बच्चा सदा बाप समान सबको खुशी दे और खुशी ले।... वाह बच्चे वाह! अपने प्राप्त हुए भाग्य को सदा सामने रखते हुए अतीन्द्रिय सुख में झूलते रहो और झुलाते रहो। बापदादा को हर एक के भाग्य पर नाज है। यह कॉमन बात नहीं है। ड्रामा अनुसार यह भाग्य प्राप्त होना भी आपके जीवन का एक बहुत बहुत बड़े में बड़ी प्राप्ति है। बापदादा हर बच्चे को उड़ती कला में देखना चाहते हैं।"

अ.बापदादा 31.12.10 मधुबन निवासी

Q.मधुबन की क्या-क्या विशेषतायें हैं, जो मधुवन निवासियों की बुद्धि में जागृत रहें तो सदा वह नशा और खुशी उनके जीवन में रहे और सदा उड़ती कला रहे?

परमात्मा ज्ञान-गुणों-शक्तियों का सागर है, ब्रह्मा बाबा ने उस ज्ञान, गुण-शक्तियों को धारण कर स्वरूप बनकर दिखाया है। दोनों ने मिलकर जहाँ कर्तव्य किया, वह भूमि कितनी महान होगी, उसकी कल्पना करना भी किसी मनुष्य की बुद्धि से परे है। परन्तु उसके महत्व को समझकर, अपने जीवन को धन्य-धन्य करने के

लिए यहाँ कुछ विचार कर रहे हैं। इस सम्बन्ध में एक मुसलमान कवि रसखान की कविता के कुछ शब्द बरबस ही याद आ रहे हैं, जिसमें उन्होंने कहा है -

मानुष हों तो वही रसखान बसौं बृज गोकुल गाँव के ग्वारन,
कंचन हू कलधौत के धाम करील के कुन्जन ऊपर वारौं।
जो खग हों तो बसेरो करौं कालन्द्री कूल कदम्ब की डारन,
जो पशु हों तो चरौं नन्द की गाय ...मझारन।

उनको वास्तविक ज्ञान तो नहीं था परन्तु श्रीकृष्ण को भगवान समझ, उन्होंने अपनी ये आन्तरिक भावनायें व्यक्त की हैं। इससे हम समझ सकते हैं कि इस मधुवन भूमि का कितना महत्व है। जिस भूमि पर परमपिता परमात्मा ने साकार में और अव्यक्त रूप में कर्तव्य किया है, पार्ट बजाया है, वह भूमि कितनी महान है और उसमें रहने वाले कितने भाग्यशाली हैं।

ये वह भूमि है, जहाँ पर शिवबाबा और उनके साकार रथ भागीरथ प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने साकार में रूहों की रुहानी सेवा करके विश्व नव-निर्माण का दिव्य कर्तव्य किया। पाण्डव भवन के चार धामों का महत्व भी बाबा ने मुरली में बताया है। साकार बाबा जब अव्यक्त हुए थे, तब शिवबाबा ने अव्यक्त सन्देश में या मुरली में कुछ ऐसा कहा था कि साकार बाबा के तन के ये पंच तत्व पंच तत्वों में विलीन होकर उनको भी पावन करेंगे।

इन सब बातों से समझ सकते हैं कि कोई आत्मा जहाँ रहती है, कर्तव्य करती है, उसका वातावरण में क्या प्रभाव होता है, जिस प्रभाव से बाद में आने वाली आत्मायें भी लाभान्वित होती हैं, उसकी महत्ता अनुभव करती हैं।

"मधुबन में ही इतना बड़ा परिवार देखने को मिलता है। और तो कहाँ इतना बड़ा परिवार इकट्ठा देख नहीं सकते। मधुवन में ही इतना बड़ा परिवार देखते हो। तो दिल में क्या आता है? वाह बाबा और वाह मेरा ईश्वरीय परिवार!"

अ.बापदादा 2.02.11

"मन्सा सेवा करने का टाइम निकालना है ना। अगर यह संस्कार की खिटखिट होगी तो वह उस समय अपनी तरफ खींच लेगी।... लॉस्ट टर्न के पहले सभी मधुबन में कोई स्थान मुकरर करना, जहाँ हर एक मधुबन निवासी संस्कार मिलन

की डेट फिक्स की अपनी चिटकी डाले। लेकिन लास्ट टर्न के पहले।... मधुबन वासी विशेष हैं। बापदादा का मधुबन निवासियों प्रति दिल का प्यार है और मधुवन वालों का भी है।" अ.बापदादा 16.03.11

"मधुबन कहने से मधुबन का बाबा याद आता है।... बापदादा खुश है कि मधुबन निवासी यह कमाल अवश्य दिखायेंगे कि हर मधुबन निवासी की सूरत और सीरत से बाबा-बाबा ही दिखाई दे। बात से बाप दिखाई दे क्योंकि मधुबन में यज्ञ सेवा का बल और फल बहुत मिलता है। लेने वाला लेवे (न लेवे), लेकिन मिलता जरूर है।" अ.बापदादा 13.04.11

"बापदादा को मधुवन के हर बच्चे से विशेष प्यार है। क्योंकि बाप के स्थापन किये यज्ञ की सेवा में स्वयं को समर्पण किया है। मधुबन निवासियों को एक तो अपने पुरुषार्थ का फल मिल रहा है और दूसरा जो मधुबन में आने वाले चाहे ब्राह्मण, चाहे नई आत्मायें आती हैं, उन्होंकी सेवा का भी पुण्य मिलता है। यज्ञ सेवा है, साधारण सेवा नहीं है। यज्ञ सेवा का एक्स्ट्रा पुण्य भी मिलता है।"

अ.बापदादा 13.04.11

"अगर कोई भी मधुबन निवासी अमृतवेले से रात तक बापदादा की श्रीमत प्रमाण चलता है, तो उसको एक्स्ट्रा पुण्य मिलता है। मधुबन वाले खुद जाने, नहीं जाने, अलबेले रहें तो भी मधुबन की सेवा का पुण्य मिलता जरूर है। मधुबन निवासी बनना साधारण बात नहीं है।... साधारण काम का भी पुण्य बहुत है क्योंकि बाप का रचा हुआ यज्ञ है।" अ.बापदादा 13.04.11

"इस यज्ञ से ही, मधुबन में ही सभी को परमात्म-प्यार प्राप्त होता है। इसलिए सिवाए मधुबन के बाप कहाँ भी नहीं आता है। यह मधुबन को बाप के आने का, मिलने-मिलाने का पार्ट नूँधा हुआ है। तो मधुबन वाले अपने पुण्य के खाते को जानो, पहचानो और उस महान प्राप्ति स्वरूप बनो।"

अ.बापदादा 13.04.11

"मधुबन निवासियों के ऊपर सभी की भावना है। तो ऐसी भावना वालों को भावना का फल दिखाओ।... बापदादा की मधुबन निवासियों से यही चाहना है कि हर मधुबन निवासी बच्चा यज्ञ स्नेही, सहयोगी बन अपनी चलन द्वारा सभी को

बाप का परिचय दे कि हम मधुबन निवासियों का कितना बड़ा भाग्य है। अपने भाग्य को अपनी चलन से प्रसिद्ध करो।"

अ.बापदादा 13.04.11

"परिवर्तन भूमि में आकर अपने परिवर्तन का अनुभव करते हो? भट्ठी में आना अर्थात् अपनी कमियों वा कमजोरियों को भस्म करना।... क्योंकि इस समय का परिवर्तन सदाकाल का परिवर्तन हो जायेगा। जैसे अग्नि में कोई भी वस्तु डाली जाती है तो अग्नि में डाली हुई वस्तु का रंग-रूप और कर्तव्य बदल जाता है। वह फिर से पहले वाला हो नहीं सकता।"

अ.बापदादा 6.08.72

मुरली और मुरलीधर

बाबा की मुरली अनन्त गुह्य-गोपनीय रहस्यों से परिपूर्ण है। जो आत्मा इसके महत्व को जानकर, उसका अध्ययन करता है, उन रहस्यों के विषय में चिन्तन कर उनको अनुभव करता, उनकी धारणा करता है, वह सदा ही अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करता है। ये विश्व-नाटक भी अनन्त गुह्य रहस्यों से परिपूर्ण है, जो उन रहस्यों को समझकर साक्षी होकर इसे देखता है और ट्रस्टी होकर अपना पार्ट बजाता है, वह इस विश्व नाटक परम सुख को अनुभव करता है। ये इस संगमयुगी जीवन की परम-प्राप्ति है।

"देखो घर बैठे भी बापदादा की रोज़ यादप्यार मिलती है। एक दिन भी मिस नहीं होती, अगर रोज़ विधिपूर्वक मुरली पड़ते हैं तो।... नये या पुराने यह पक्का नोट करो कि मुरली कब मिस नहीं करनी है। जैसे बाप कब मुरली मिस नहीं करते, ऐसे बच्चों को भी मुरली मिस नहीं करना है।... मधुबन वाले भी हाथ उठाओ कि किसी भी कारण से मुरली मिस नहीं करनी है।... यह भी नियम है। ब्राह्मण माना मुरली सुनने वाला, सेवा करने वाला।"

अ.बापदादा 2.02.11

"जब तक रॉंग-राइट को नहीं जानते और जानकर राइट कर्म नहीं करते, तब तक सम्पूर्ण बर्थ-राइट नहीं ले सकते हो।... यह तीनों सदा कायम रहें, उसके लिए मुख्य किस बात का अटेन्शन रहना चाहिए, जो बहुत सहज है और सभी कर

सकते हैं? रिवाइज कोर्स की मुरली पढ़ना और धारण करना।"

सा.बाबा 30.01.11 रिवा.

बाबा ने कहा मुरली से प्यार माना मुरलीधर से प्यार और मुरलीधर से प्यार माना मुरली से प्यार। शिवबाबा ने साकार बाबा के द्वारा जो मुरली चलाई, वही यथार्थ मुरली है, अव्यक्त बापदादा उस मुरली को रिवाइज़ कराते हैं। बाबा ने सारा ज्ञान साकार बाबा के द्वारा दिया है, जिसको धारण करके ही ब्रह्मा बाबा ने सम्पूर्णता को पाया है।

"जो रिवाइज कोर्स की मुरली कब मिस नहीं करते और धारणा करने का सदा अटेन्शन रखते, वे हाथ उठाओ। ... ड्रामा अनुसार यह रिवाइज़ कोर्स इसीलिए हो रहा है कि अभी प्रैक्टिकल में नहीं आये हो। जितना सुनते हो और सुनाते हो, उतना प्रैक्टिकल में पॉवर नहीं भरी है।"

अ.बापदादा 24.06.72

"रिवाइज़ कोर्स में जो चीज बहुत रिवाइज़ हो रही है, वह है अमृतवेला। अमृतवेले अपने आपसे और बाप से रूह-रिहान करने को विशेष महत्व देना। ... अमृतवेले के समय अपनी आत्मा को अमृत से भरपूर कर देने से सारा दिन कर्म भी ऐसे होंगे।"

अ.बापदादा 24.06.72

"रोज़ की मुरली रोज़ का होमवर्क है।... तो जब बाप का प्यार मुरली से है तो जो मेरा बाबा कहता है, उसका पहला प्यार बाप के साथ, बाप की मुरली से होना चाहिए। ब्रह्मा बाप ने एक दिन भी मुरली मिस नहीं की।... लास्ट दिन सवेरे का क्लास नहीं कराया लेकिन शाम को क्लास कराने के बाद अव्यक्त हुए।"

अ.बापदादा 18.01.11

"जब बाप का प्यार मुरली से है तो जो मेरा बाबा कहता है, उसका पहला प्यार बाप के साथ बाप की मुरली से होना चाहिए। ... मुरली क्लास में पढ़ना या क्लास में सुनना, अगर मजबूरी है, बहाना नहीं, तो किससे सुनो। जो समझते हैं - मुरली का इतना महत्व रखूँगा, वे हाथ उठाओ। ... बाप बीच-बीच में पेपर भी लेगा।"

अ.बापदादा 18.01.11

"कोई बात नहीं लेकिन अभी बाकी जो भी समय मिला है, उसमें बाप के महावाक्य

जरूर सुनना। बाप परमधाम से आता है, सूक्ष्मवतन से ब्रह्मा बाबा आता है और आकर महावाक्य उच्चारण करते हैं, इसलिए मुरली कभी भी, एक दिन भी मिस नहीं करना। नहीं तो बापदादा का दिलतख्त छूट जायेगा। इसलिए जो मुरली मिस करते हैं, वे सम्प्रझें हम तीन तख्त के मालिक नहीं, दो तख्त के मालिक भी यथा शक्ति बनेंगे। इसलिए मुरली, मुरली, मुरली। क्योंकि मुरली में रोज़ के डॉयरेक्शन होते हैं, चारो ही सब्जेक्ट के डॉयरेक्शन होते हैं।... कैसे भी मुरली जरूर सुनें।"

अ.बापदादा 17.02.11

"अभी तुम बच्चों को देहाभिमान छोड़कर देही-अभिमानी बनना पड़े। हम आत्मा हैं, यह तो पुराना शरीर है, अभी हमको इसको छोड़कर नया फर्स्टक्लास शरीर लेना है। सर्प का मिसाल है ना।... अभी तुम बच्चों की बुद्धि में यह ज्ञान है, सारा दिन यह ज्ञान बुद्धि में टपकना चाहिए। इस पुरानी दुनिया को देखते हुए भी बुद्धि से भूल जाना है।"

सा.बाबा 6.05.11 रिवा.

मुरली ब्राह्मण जीवन का आधार है, ब्राह्मण जीवन का स्वांस है। जो मुरली के महत्व को नहीं जानता, उसको सुनता-पढ़ता नहीं, उस पर मनन-चिन्तन नहीं करता, उसकी धारणा नहीं करता, वह ब्राह्मण ही नहीं है।

सर्व प्रकार के आध्यात्मिक ज्ञान का आधार मुरली है। मुरली ही सर्वात्माओं के मुक्ति-जीवनमुक्ति का एकमात्र आधार है। दुनिया में सभी प्रकार के ज्ञान और शास्त्रों के होते भी आत्मा की उतरती और विश्व की कला ही होती है। चढ़ती कला का एकमात्र आधार बाबा और बाबा की मुरली है अर्थात् बाबा के द्वारा दिया हुआ ज्ञान ही है।

जो मुरली के महत्व को यथार्थ रीति समझता, निश्चयबुद्धि होकर उसका मनन-चिन्तन करता, वह सदा ही अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करता है, इसलिए उसको और कुछ पढ़ने या जानने की न आवश्यकता होती है और न ही उसकी किसमें रुचि होती है, न ही उसके पास कुछ पढ़ने या जानने आदि का समय होता है। वह अपना तन-मन-धन, समय-स्वांस-संकल्प मुरली के अध्ययन में, उसके मनन-चिन्तन में और ब्राह्मण जीवन के कर्तव्य अर्थात् ईश्वरीय सेवा में लगाता है।

जो मुरली के महत्व को जानकर, उस विधि और संकल्प से मुरली को

पढ़ता है, उसके सामने सब रहस्य स्वत: स्पष्ट होते हैं या समय पर स्पष्ट हो जाते हैं क्योंकि उसका बुद्धियोग मुरलीधर परमात्मा के साथ होता है, जो बुद्धिमानों की बुद्धि हैं। सेवा में भी उसको कब कोई बाधा नहीं आती है, समय पर व्यक्ति के अनुसार उसको उत्तर अवश्य आता है।

Q.क्या साकार बाप के समय और अव्यक्त बापदादा के समय के यज्ञ का विधि-विधानों में कोई अन्तर है?

साकार में निराकार बाप ने हमको इस विश्व-नाटक के विधि-विधानों, कर्म और फल, पुरुषार्थ और प्रालब्ध के जो विधि-विधान बताये हैं, वे अटल सिद्धान्त हैं। वे जैसे साकार बाबा के समय थे, वैसे ही अभी भी हैं। समय की गति और आत्माओं की स्थिति परिवर्तनशील है, इसलिए हर आत्मा उनको अपने दृष्टिकोण से देखती है, समझती है और उस अनुसार धारणा करती है। जो जैसी धारणा करता है, कर्म करता है, उस अनुसार उसको फल अवश्य मिलता है। साकार में शिवबाबा ने सारा ज्ञान दिया है, उनको साकार मुरली से समझ कर, उन पर निश्चय कर, उस अनुसार जीवन में धारणा करने और पुरुषार्थ करने वाले ही इस ईश्वरीय जीवन में सफल होते हैं। उनके जीवन में असफलता आ नहीं सकती।

Q.जब सृष्टि की और सब योनियों की आत्मायें बिना पुरुषार्थ के पावन बन जाती हैं तो मनुष्यों और उसमें भी विशेष ब्राह्मण आत्माओं को बाबा का ये ज्ञान धारण करने और राजयोग के अभ्यास की आवश्यकता क्यों है?

परमधाम जाने के लिए सभी आत्माओं को पावन बनना ही है और बनेंगी भी और मनुष्यात्मायें भी बनेंगी, परन्तु नई दुनिया में पहले आने, उसमें ऊंच पद पाने के लिए ज्ञान-योग की धारणा की अति आवश्यकता है, जिसके आधार पर ही सतयुगी नई दुनिया में नम्बरवार पद बनते हैं। इसलिए ब्राह्मण आत्माओं को सहज राजयोग के अभ्यास और सहज ज्ञान को धारण कर और उसके आधार पर सेवा करने की आवश्यकता है।

दूसरी बात मनुष्य संसार का सबसे अधिक बुद्धिमान और चिन्तनशील प्राणी है, इसलिए उसके अच्छे या बुरे संकल्पों का और कर्मों का जड़-जंगम-चेतन तीनों प्रकार प्रकृतियों पर गहरा प्रभाव होता है। मनुष्यात्माओं के दूषित

संकल्पों से सारे विश्व का वातावरण दूषित हो गया है, अब उसको पावन बनाने के लिए मनुष्यों का सुधार अति आवश्यक है, जिससे उसके संकल्पों के वायब्रेशन्स से सारा विश्व पावन बनेंगा। इसीलिए अभी मुरलियों में बाबा हमको चेतन आत्माओं के साथ जड़-जंगम प्रकृति को भी पावन बनाने की बात कहते हैं।

"शिवशक्ति स्वरूप की स्मृति मायाजीत, प्रकृतिजीत स्वत: बना देती है क्योंकि बापदादा ने सुना दिया है कि वर्तमान समय प्रकृति अपना कार्य करती रहती है क्योंकि प्रकृति को मनुष्य आत्मायें तंग करती हैं तो प्रकृति भी तंग करती है। ... आप प्रकृतिजीत बन प्रकृति को भी सतोप्रधान बना रहे हो। लोग तो प्रकृति की हलचल देखकर डरते हैं कि कल क्या होगा, लेकिन आप जानते हो कि अच्छे ते अच्छा होगा।" अ.बापदादा 31.04.11

Q.ज्ञान का सुख और योग द्वारा जीवनमुक्त स्थिति का परम सुख किस आधार पर और किन आत्माओं को प्राप्त होता है?

ज्ञान और योग दोनों प्रकार का सम्पूर्ण सुख किन्हीं विशेष आत्माओं को ही प्राप्त होता है। जैसे साकार ब्रह्मा बाबा को। बाकी सभी आत्माओं में किसको ज्ञान का सुख प्राप्त होता है और किसको योग द्वारा जीवनमुक्त स्थिति का सुख प्राप्त होता है। बुद्धिजीवी ज्ञान की प्रधानता वाली आत्मायें ज्ञान की सेवा करके, भाषण आदि से आत्माओं को प्रभावित करके मान-शान, साधन-सम्पत्ति प्राप्त करती हैं और उनका सुख भोगती हैं। ऐसे ही अनेक भावना प्रधान योगी आत्मायें सहज ही देह से न्यारी स्थिति में स्थित होकर जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करती हैं।

अपने दैवी परिवार में अनेकानेक भावना प्रधान योगी आत्मायें सहज कर्मभोग से मुक्त, देह का त्याग करते हैं, वे कर्मभोग होते भी उसकी वेदना से सहज मुक्त रहते हैं, भल उनके पास बहुत साथी सहयोगी, साधन-सम्पत्ति नहीं होती है और ऐसी बुद्धिजीवी ज्ञानी आत्मायें भी अनेकानेक हैं, जिनको उनकी बौद्धिक सेवा के आधार पर विपुल साधन-सम्पत्ति है, अनेक सेवा साथी हैं, मान-शान है परन्तु उनको भावना प्रधान योगी आत्माओं की अपेक्षा कर्मभोग अधिक होता है और देह के त्याग में भी अपेक्षाकृत अधिक समय लगता है, सहज नहीं होता है, शारीरिक-मानसिक वेदना भी होती है। बुद्धिजीवी ज्ञानी आत्माओं में ही

मान-शान की लालसा के कारण राग-द्वेष, ईर्ष्या-घृणा, अहंकार-हीनता आदि के कारण मानसिक टेन्शन होता है, व्यर्थ संकल्प आदि अधिक होते हैं, जिसके कारण कई प्रकार की अप्रिय घटनायें भी होती रहती हैं, परन्तु भावना प्रधान योगी आत्माओं में ये अपेक्षाकृत कम होता है, इसलिए वे टेन्शन-फ्री, व्यर्थ संकल्पों से मुक्त सहज जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करते हैं।

Q.लौकिक दुनिया में कन्या की शादी हो जाती है तो उसकी बुद्धि एक पति के साथ ऐसी जुट जाती है, जो दुनिया का सब कुछ भूल जाती है। अभी हमने भी परमात्मा के साथ सम्बन्ध जोड़ा है, तो हमारी बुद्धि परमात्मा के साथ ऐसी क्यों नहीं जुटती है, जो उसके सिवाए कोई भी याद न आये?

शादी होने के बाद पतिव्रता पत्नि की बुद्धि अपने पति के अतिरिक्त और कहाँ जाने को पाप समझती है, इसलिए उसका सम्बन्ध अपने पति के साथ दृढ़ता से जुट जाता है। हमारी बुद्धि में भी यह धारणा पक्की हो जाये कि हमने परमात्मा के साथ सम्बन्ध जोड़ा है और परमात्मा से पवित्रता की प्रतिज्ञा की है, तो बुद्धि कहाँ जा नहीं सकती, परन्तु हमारे में ऐसी दृढ़ता न होने के कारण और उसको पाप न समझने के कारण हमारी बुद्धि, दृष्टि-वृत्ति चंचल होती है। इसलिए इस सत्य को समझकर कि व्रत को तोड़ना पाप है और परमात्मा के साथ सम्बन्ध जोड़ा है तो बुद्धि कहाँ जाना पाप है, यह धारणा पक्की करनी है।

"पहले तो वृत्ति चंचल होने का कारण क्या है, वह जानना है। वृत्ति चंचल वा साधारण होने का कारण यही है कि आने से ही जो पहला व्रत लेते हो वा प्रतिज्ञा करते हो, उससे नीचे आ जाते हो। व्रत को भंग कर लेते हो वा प्रतिज्ञा को भूल जाते हो। पहला-पहला व्रत है कि मन-वाणी-कर्म में पवित्र रहेंगे और दूसरा व्रत है - एक बाप, दूसरा न कोई। भक्ति मार्ग में व्रत रखकर फिर बीच में खण्डन कर देते तो उसको पुण्यात्मा के बदले पापात्मा कहा जाता है।... भक्त लोगों की जान भी चली जाये, तो भी व्रत नहीं तोड़ते हैं।"

अ.बापदादा 6.8.72

नोट:- 1. सच्चे और तीव्र पुरुषार्थी को यथार्थता अर्थात् वास्तविकता और कल्पना दोनों पर विचार करके अपने अभ्यास की दिशा निश्चित करना चाहिए।

कल्पना से वास्तविकता की ओर जाया जाता है। कल्पना सदा काल नहीं रहती है, इसलिए उसका प्रभाव भी सदा काल नहीं रहता है। वास्तविकता सदा काल रहती है, इसलिए उसका प्रभाव भी सदा काल के लिए होता है, इसलिए वास्तविकता का विचार कर किया गया पुरुषार्थ अविनाशी होता है।

2.विचारणीय है - यदि परमधाम में स्थित होकर आत्मा शक्ति और शान्ति की किरणें दे सकती हैं, उससे किरणें प्रवाहित हो सकती हैं तो सारे कल्प जब शिवबाबा परमधाम में रहते हैं, तो भी उनसे शान्ति-शक्ति की किरणें प्रवाहित होनी चाहिए और स्थूलवतन में आत्माओं को मिलनी चाहिए क्योंकि परमात्मा तो ज्ञान-सूर्य हैं। और यदि वे किरणें आत्माओं को मिले तो आत्मा तमोप्रधान ही न बनें। इसलिए वास्तविकता ये है कि जब आत्मा देह में प्रवेश करती है और आत्मा में संकल्प उठता है, तब ही आत्मा से वायब्रेशन पैदा होता है।

"वास्तविक गम्भीरता में रमणीकता समाई हुई होती है। ... लेकिन यथार्थ गम्भीरता का गुण रमणीकता के गुण सम्पन्न होता है। ... कितना भी कोई जोर से हिलाये, लेकिन बेहद के वैराग्यवृत्ति वाले नष्टोमोहा स्मृतिस्वरूप होते हैं।"

अ.बापदादा 19.09.72

`नव-युग और नव-युग निर्माता

Q.नवयुग संगमयुग को कहें या सतयुग को कहें? यदि संगमयुग को कहें तो कहाँ से एवं कैसे और सतयुग को कहें तो कब से? दोनों की प्राप्तियों में कहाँ की प्राप्तियाँ महान है?

Q.संगमयुग के दो पार्ट हैं। एक पुराने कल्प में और दूसरा नये कल्प, तो दोनों में कहाँ की प्राप्तियाँ महान हैं और क्यों?

Foundation Completion Construction ये संगमयुग के तीन पार्ट हैं।

नवयुग का फाउण्डेशन पुराने कल्प के संगम समय में लगता है, जो विनाश के बाद पूरा होता है और नवयुग अर्थात नई राजधानी का निर्माण कार्य नये कल्प के संगम पर होता है, जो लक्ष्मी-नारायण के सिंहासन पर बैठने के समय पूरा होता है।

संगमयुग के Ist Part में संगमयुग के IInd Part में

Foundation Completion Construction

फर्स्ट पार्ट में - परमात्मा का हाथ और साथ; आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र का ज्ञान; त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी स्थिति; सतयुग का फाउण्डेशन; एडवान्स पार्टी का पार्ट; अन्त में फर्स्ट नवयुग निर्माता परमात्मा का पार्ट पूरा; आदि आदि।

सेकण्ड पार्ट में - सतोप्रधान प्रकृति, राजाई की स्थापना अर्थात् सतयुग निर्माण का कार्य सम्पन्न; एडवान्स पार्टी और सतोप्रधान प्रथम जन्म की आत्माओं का संगम; सेकण्ड नवयुग निर्माता अर्थात् ब्रह्मा बाबा का श्रीकृष्ण के रूप में पार्ट प्रारम्भ; आदि आदि।

Q.न्यू मैन कौन अर्थात ब्रह्मा बाबा या श्रीकृष्ण?

कल्प-वृक्ष का न्यू-मैन ब्रह्मा बाबा को कहा जायेगा और स्वर्ग का न्यू-मैन श्रीकृष्ण को कहा जायेगा। दोनों का पार्ट संगमयुग पर चलता है। एक का पुराने कल्प के संगम समय में और दूसरे का नये कल्प के संगम समय पर। पुरुषार्थ और प्रॉलब्ध एक ही सिक्के दो पहलू हैं। तो एक है पुरुषार्थ के संगम का न्यू-मैन और दूसरा है प्रॉलब्ध के संगम का न्यू-मैन।

सृष्टि - चक्र
हर 5000 वर्ष के बाद
हू-ब-हू पुनरावृत्त

गीता ज्ञान-दाता त्रिमूर्ति शिव

और

उनकी प्रथम रचना

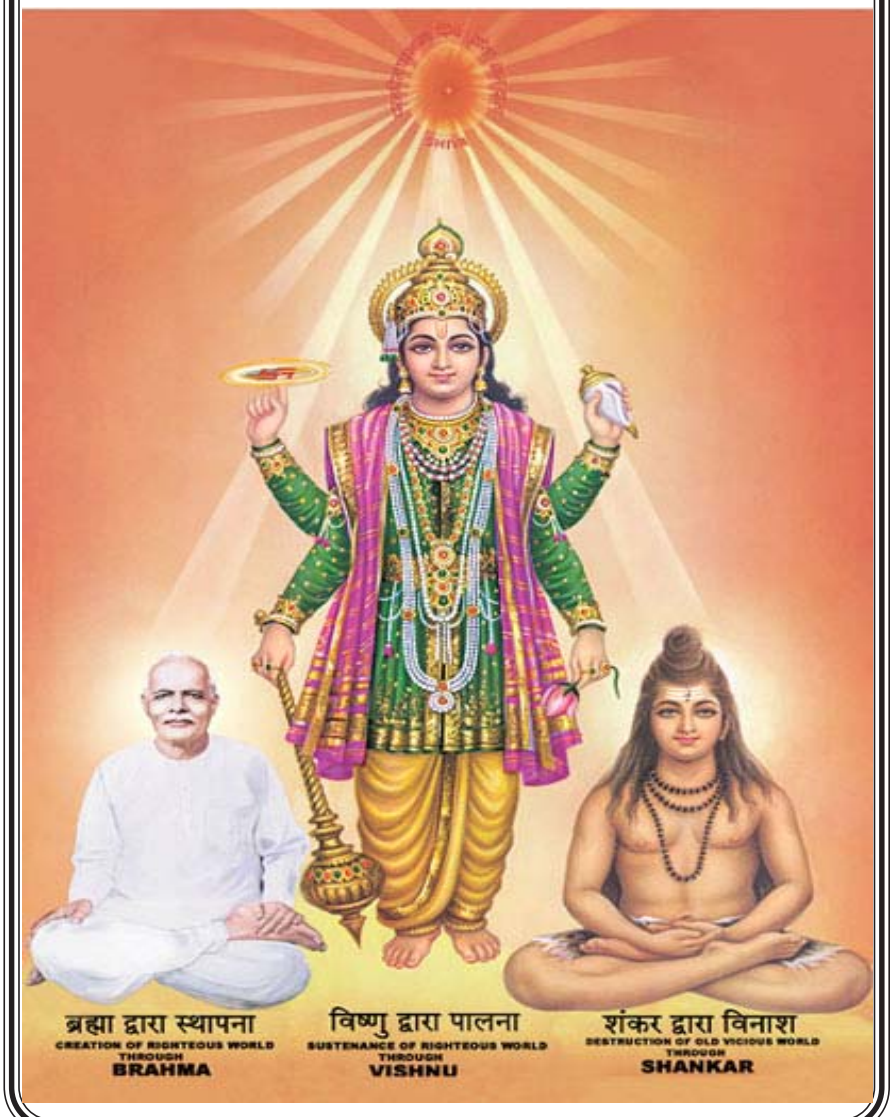

"जिनकी बुद्धि में यह नॉलेज टपकती रहेगी, उनको अपार खुशी होगी ... सदैव बुद्धि में यह ज्ञान टपकता रहे तो तुम खुशी में रहेंगे, फिकर से फारिग हो जायेंगे।" सा.बाबा 3.10.01 रिवा.

यह अटल सत्य है कि जो हुआ, वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुअ, वह हो नहीं सकता। जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा. वह भी अच्छा होगा क्योंकि ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। पवित्रता ही जीवन है। पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थिति, आत्मिक स्मृति, आत्मिक दृष्टि और आत्मिक वृत्ति। जहाँ पवित्रता है, वहाँ सर्व प्राप्तियां, सर्व सुख स्वत: होते हैं और इच्छामात्रम् अविद्या होती है। सर्व सम्बन्धों में मधुरता होती है, ब्रह्मचर्य की स्वभाविक धारणा होती है। राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा, अहंकार-हीनता का नाम-निशान नहीं होता है और मान-अपमान, निन्दा-स्तुति, जय-पराजय, लाभ-हानि, यश-अपयश, सुख-दुख, अपने-पराये में समान स्थिति होगी। पवित्र आत्मा में समय पर कृत्य का संकल्प स्वत: जागृत होता है, उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वत: होती है, इसलिए सदा निर्संकल्प होती है। सर्व आत्माओं के प्रति उसकी शुभ भावना, शुभ कामना होती है, जिसके परिणाम स्वरूप सर्व आत्माओं की उसके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना होती है।

यह विश्व एक नाटक है, इसमें न कोई अपना है और न कोई पराया। न कोई अपना मित्र है और न कोई अपना शत्रु। जो आज अपना है, वह कल पराया होगा और पराया अपना होगा। न कोई हमको कुछ दे सकता है और न कोई हमारा कुछ ले सकता है। न किसी ने हमको कुछ दिया है और न ही हमारा किसी ने कुछ लिया है। हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है और अपने कर्मों अनुसार सुख या दुख को पा रही है। इसलिए किससे राग-द्वेष, भय-चिन्ता का कोई प्रश्न ही नहीं।

दाता एक परमात्मा है, उसने हमको जो दिया है, वही हमारे लिए हितकर है। भगवानोवाच्य - बच्चे, तुम परमधाम के रहने वाले हो, इस सृष्टि पर पार्ट बजाने आये हो, अभी तुमको वापस घर चलना है। इस सत्यता को समझकर देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर निर्भय, निश्चिन्त, निर्संकल होकर परम-शान्ति, परम-शक्ति का अनुभव करो, बाप के साथ विश्व-कल्याण की सेवा कर परमानन्द का अनुभव करो और साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखो और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हुए परम सुख का अनुभव करो। यही सुख-शान्तिमय जीवन का सुगम पथ है।

इस सत्य पर दृढ़ निश्चय होगा और सतत् अभ्यास तथा सहज स्थिति होगी तब ही हम अपनी अन्तिम मंजिल सुखमय जीवन और सुखद मृत्यु को सहज प्राप्त कर सकेंगे अर्थात् राग-द्वेष, भय-चिन्ता से मुक्त होंगे। यही जीवन की परम-प्राप्ति, परमात्मा का परम वरदान, इस ब्राह्मण जीवन का परम-पुरुषार्थ और इस जीवन का परम-कर्तव्य है।

यह बात भी ध्यान में रखना अति आवश्यक है - ड्रामा का ज्ञान और आत्मिक स्थिति रूपी दोनों पहिये साथ होंगे और उनके बीच में परमात्मा रूपी धुरी होगी तब ही गाड़ी सफलतापूर्वक चलेगी।

"ब्राह्मण अर्थात् निश्चयबुद्धि और निश्चयबुद्धि अर्थात् विजयी। तो हर एक ब्राह्मण निश्चयबुद्धि कहाँ तक बने हैं और विजयी कहाँ तक बने हैं। क्योंकि ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है निश्चय और निश्चय का प्रमाण है विजय।" अ.बापदादा 15.4.92

परम गौरवमय

आत्मिक स्वरूप परम-शान्त, परम-शक्तिमय, निर्संकल्प है।

परमात्मा पिता का साथ और उसके साथ विश्व-कल्याण की सेवा निर्भय-निश्चिन्त और परमानन्दमय है।

विश्व-नाटक अनन्त रहस्यों से परिपूर्ण है, उसको जानकर साक्षी होकर देखना और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाना परम सुखमय है।

इस परम सत्य को जानकर देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने वाली आत्मा परम-शान्ति, परम-शक्ति, परमानन्द और परम-सुख को अनुभव करती है, उसके लिए न किसी व्यक्ति या साधन की आवश्-ाकता है और न किसी का कोई बन्धन है। उस परमात्मा ने हमको सब दिया है, उसकी छत्रछाया सदा हमारे ऊपर है, उसकी अनुभूति करना हर आत्मा का अपना कर्तव्य है। यही मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव है, जो संगमयुग पर परमपिता परमात्मा का ईश्वरीय जन्मसिद्ध अधिकार है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र

(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),

बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,

ज्ञान सरोवर, आबू पर्वत - 307501

राजस्थान, भारत

मोबाईल: 9414 15 1879, 9414 00 3497,

9414 08 2607

फैक्स – 02974-238951

ई-मेल – bksparc@gmail.com,

sparc@bkivv.org